संस्कृत साधना भाग-8

प्रथमः पाठः

प्रार्थना

हिंदी अनुवाद

प्राणदं शीतलं ..... नमामि तम्।।

अनुवाद—जिसने प्राण देनेवाली ठंडी हवा को, जीवन देने वाले स्वच्छ जल को और अन्न देनेवाली धरती माता को बनाया, उस परमात्मा को मैं प्रणाम करता हूँ।

येन शुक्लीकृतो ..... सर्वात्मने नमः।।

अनुवाद—जिसने हंस को सफेद, समुद्र को नमकयुक्त और सूर्य को सहस्रों किरणों वाला बनाया, उस सर्वात्मा को मेरा प्रणाम है।

येन विचित्रतं ..... नमामि तम।।

अनुवाद—जिसने फूलों को रंग-बिरंगा बनाया, चंद्रमा में शीतलता का समावेश किया, धरती को सब कुछ सहने वाली बनाया, उस विश्वात्मा को मैं प्रणाम करता हूँ।

वन्द्यः पिता ..... धार्यतेऽखिलम्।।

अनुवाद—पिता स्वरूप महान् आकाश (हमारे लिए) वंदनीय है। माता के समान धरती पूज्या है। जिसने संपूर्ण विश्व को धारण किया हुआ है, वह परमेश्वर सदा ध्यान करने योग्य है।

सर्वे भवन्तु ..... भवेत।।

अनुवाद—सब लोग सुखी रहें, सब लोग रोगरहित हों, सब लोग अच्छाइयों को देखें, कोई भी दुःखी न हो।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) महोदधिः लवणाक्तः अस्ति।
(ख) सहस्रांशुः सूर्यः अस्ति।
(ग) परमात्मना पुष्पं विचित्रितम्।
(घ) पृथ्वी सर्वंसहा: अस्ति।
(ङ) पिता वन्द्यः अस्ति।
(च) सब लोग सुखी रहें, सब लोग रोगरहित हों, सब लोग अच्छाइयों को देखें, कोई भी दुःखी न हो।

2. निम्नलिखित श्लोकों को पूरा कीजिए—

(क) येन शुक्लीकृतो **हंसो लवणाक्तो महोदधिः।**
सहस्रांशुः कृतः सूर्यस्तस्मै सर्वात्मने नमः।
(ख) सर्वे भवन्तु सुखिनः **सर्वे सन्तु निरामयाः।**
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।

3. निम्नलिखित श्लोकों का हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) **प्राणदं शीतलं ..... नमामि तम्।।**
अनुवाद—जिसने प्राण देनेवाली ठंडी हवा को, जीवन देने वाले स्वच्छ जल को और अन्न देनेवाली धरती माता को बनाया, उस परमात्मा को मैं प्रणाम करता हूँ।
(ख) **येन विचित्रतं ..... नमामि तम।।**
अनुवाद—जिसने फूलों को रंग-बिरंगा बनाया, चंद्रमा में शीतलता का समावेश किया, धरती को सब कुछ सहने वाली बनाया, उस विश्वात्मा को मैं प्रणाम करता हूँ।
(ग) **वन्द्यः पिता ..... धार्यतेऽखिलम्।।**
अनुवाद—पिता स्वरूप महान् आकाश (हमारे लिए) वंदनीय है। माता के समान धरती पूज्या है। जिसने संपूर्ण विश्व को धारण किया हुआ है, वह परमेश्वर सदा ध्यान करने योग्य है।

4. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) परमेश्वरः एव अस्य संसारस्य पालकः अस्ति।
(ख) येन अस्मभ्यं स्वच्छं जलं प्रदत्तं तस्मै वयं नमामः।
(ग) येन सूर्यः सहस्रांशुः कृतः तस्मै वयं नमामः।
(घ) वसुधा अस्माकं माता अस्ति।
(ङ) नीरोगाः जनाः सदा सुखिनः तिष्ठन्ति।
(च) अस्मिन् संसारे कश्चिदपि दुःखभागी न भवेत्।

5. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

विश्वात्मने = **विश्व + आत्मने**
सहस्रांशुः = **सहस्र + अंशुः**
यश्चकार = **यः + चकार**
लवणाक्तः = **लवण + क्तः**
महोदधिः = **महा + उदधिः**

6. पाठ के आधार पर सही विशेषणों को रेखांकित कीजिए—

पृथ्वी = ताम्रा अन्नदा निन्नमा
वायु: = सहस्रांशु: विचित्रत: प्राणद:
जलम् = शुक्लीकृतम् अन्नदम् जीवदम्
चन्द्र: = प्राणद: शीतलीकृत: लवणाक्त:
परंब्रह्म = हेयम् ध्ययेम् पेयम्

द्वितीयः पाठः

जननी जन्मभूमिश्च

हिंदी अनुवाद

रम्या रामायणी .....गरीयसी।''

अनुवाद—यह प्रसंग रमणीय रामायण कथा में है। राम ने रावण को मार दिया। युद्ध समाप्त हो गया। विभीषण राम से बोले—''इस लंका को आपके चरणों में अर्पित करता हूँ। आप ही यहाँ के राजा हों।'' लक्ष्मण की भी वैसी ही इच्छा थी। तब राम ने लक्ष्मण को कहा—''हे लक्ष्मण! यह स्वर्णमयी लंका (सोने की लंका) भी मुझे अच्छी नहीं लगती है। क्योंकि माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक पूज्या हैं, श्रेष्ठ हैं।''

सेयम् ..... कथ्यते।

अनुवाद—वह यही हमारी जन्मभूमि भारत है। जल से परिपूर्ण, फलों से परिपूर्ण और हरी-भरी यह माता के समान हमारी रक्षा करती है। भारत माता की गोद में पवित्र जल को धारण करती हुई गंगा, कावेरी, ब्रह्मपुत्र आदि नदियाँ प्रवाहित होती हैं। बर्फ से ढका हिमालय इसके सफेद मुकुट के समान शोभायमान होता है। सागर इसके चरण निरंतर धोते रहते हैं।

भारत का अर्थ है—'प्रकाश के फैलाने में लगा हुआ।' इसलिए इस नाम से यह भूमि का टुकड़ा जाना जाता है। जहाँ ज्ञान का प्रकाश निरंतर फैलता है। यह भारत-भूमि देवताओं के समान ज्ञानियों और गुणियों की भूमि है। इसलिए यह 'देवभूमि' भी कही जाती है।

भारतभूमेः ..... वैशिष्ट्यमस्ति।

अनुवाद—भारतभूमि का गौरव प्राचीन और उन्नत है। यहाँ लोगों की विभिन्न वेशभूषा और विभिन्न भोजन है। यहाँ विभिन्न भाषाएँ और उनमें रचित प्रसिद्ध ग्रंथ विद्यमान हैं। भरतनाट्यम् और ओड़िसी नृत्य जैसी भारतीय नृत्यकला न केवल भारत में अपितु संसार में प्रसिद्ध है। श्रीनगर और कन्याकुमारी जैसे मनोहर पर्यटन-स्थल सभी के मनों को आकर्षित करते हैं। भारत में विविध धर्म और उनके विविध पूजास्थल हैं। किंतु ऐसी विविधता में भी एकता ही इस भूमि की विशेषता है।

शिक्षायां ..... करिष्यामः।

अनुवाद—शिक्षा में और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भारत हमेशा अग्रणी रहा है। प्राचीन काल में नालंदा, तक्षशिला आदि विश्वविद्यालय संपूर्ण विश्व में बहुत प्रसिद्ध थे। आधुनिक काल में भी चिकित्साशास्त्र में, संगणक विद्या (कंप्यूटर के क्षेत्र में) में और दूसरे वैज्ञानिक क्षेत्रों में भारतीय सारे विश्व में प्रसिद्ध हैं। हमारे लिए यह भारतभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ और पूज्या है। हम अपनी माता के समान इस जन्मभूमि की लगातार सेवा करते हैं। इसकी एकता, अखंडता और गौरव की रक्षा करने के लिए हम अपने जीवन का त्याग भी करेंगे।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) रामः लक्ष्मणम् अकथयत् यत्—एषा स्वर्णमयी लङ्काऽपि मह्यं न रोचते यतोहि जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि श्रेष्ठा अस्ति।
(ख) अस्मान् भारतभूमिः मातेव रक्षति।
(ग) हिमालयः भारतमातुः श्वेतमुकुटम् अस्ति।
(घ) सागराः अस्याः चरणयुगलं प्रक्षालयन्ति।
(ङ) भारतभूमिः देवभूमिरपि अतः उच्चते यतोहि इयं देवतुल्यानां ज्ञानिनां गुणिनां च भूमिरस्ति।
(च) विविधतायामपि एकता अस्याः भारतभूमेः वैशिष्ट्यम् अस्ति।
(छ) वयं मातरमिव जन्मभूमिं सेवामहे।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) सागराः भारतमातुः चरणयुगलं **निरन्तरं प्रक्षालयन्ति**।
(ख) इयं **देवतुल्यानां** ज्ञानिनां भूमिः अस्ति।
(ग) अत्र विविधतायाम् **अपि एकता** एवास्ति।
(घ) वैज्ञानिकेषु क्षेत्रेषु भारतीयाः **समग्रे विश्वे प्रसिद्धाः** सन्ति।
(ङ) भारतभूमिः **स्वर्गाद्** अपि श्रेष्ठा अस्ति।

3. निर्देशानुसार धातुरूप लिखिए—

(क) **अभवः अभवतम् अभवत्**

(ख) **अस्तु स्ताम् सन्तु**

(ग) **रक्षेत् रक्षेताम् रक्षेयुः**

(घ) **सेविष्यते सेविष्येते सेविष्यन्ते**

(ङ) **शोभसे शोभेथे शोभध्वे**

4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) जन्मभूमिः = **जिस भूमि पर जन्म लिया हो।**
अस्माकं **जन्मभूमिः** भारतः अस्ति।

(ख) अङ्के = **गोद में।**
शिशुः मातुः **अङ्के** आगत्य अति आनन्दम् अनुभवति।

(ग) हिमाच्छादितः = **बर्फ से ढका हुआ।**
हिमाच्छादितः हिमालयः भारतभूमेः श्वेतमुवमिव शोभते।

(घ) प्रकाशः = **उजाला।**
भारतभूमौ ज्ञानस्य **प्रकाशः** निरन्तरं प्रसरति।

(ङ) सततम् = **लगातार।**
सागराः भारतभूमेः चरणयुगलं **सततं** प्रक्षालयन्ति।

(च) सेवामहे = **सेवा करते हैं।**
वयं स्व जन्मभूमिं मातरमिव **सेवामहे**।

5. निम्नलिखित पाठ्यांशों का अनुवाद कीजिए—

(क) **रामः रावणं ..... राजा भवतु।**
अनुवाद—राम ने रावण को मार दिया युद्ध समाप्त हो गया। विभीषण राम से बोले—"इस लंका को आपके चरणों में अर्पित करता हूँ। आप ही यहाँ के राजा हों।"

(ख) **इयं भारतभूमिः ..... अपि कथ्यते।**
अनुवाद—यह भारतभूमि देवताओं के समान ज्ञानियों और मुनियों की भूमि है। इसलिए यह 'देवभूमि' भी कही जाती है।

(ग) **शिक्षायां ..... प्रसिद्धाः आसन्।**
अनुवाद—शिक्षा में और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भारत हमेशा अग्रणी रहा है। प्राचीन काल में नालंदा, तक्षशिला आदि विश्वविद्यालय संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध थे।

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) अस्माकं कृते जन्मभूमिः मातेव अस्ति।

(ख) भारतभूमिः मातेव अस्मान् रक्षति।

(ग) भारते अनेकानि तीर्थस्थलानि सन्ति यत्र सहस्राः जनाः प्रतिदिनम् आगच्छन्ति।

(घ) अस्माभिः कायेन-मनसा-वाचा भारतमातुः सेवा करणीया।

(ङ) भारतस्य नद्यः पवित्रं जलं धारयन्ति।

(च) वयं स्वजीवनं भारतमातुः चरणयोः अर्षयामः।

(छ) अस्यां धरायाम् अनेकाः ऋषि-मुनयः जन्म अलभन्।

(ज) अद्य प्रत्येके क्षेत्रे भारतदेशः विश्वे अग्रसरः अस्ति।

7. निम्नलिखित शब्दों का पद-परिचय दीजिए—

भूमौ = **स्त्रीलिङ्गः, सप्तमी विभक्तिः, एकवचनम्**

इयम् = **स्त्रीलिङ्गः, प्रथमा विभक्तिः, एकवचनम्**

भारतमातुः = **स्त्रीलिङ्गः, षष्ठी विभक्तिः, एकवचनम्**

अङ्के = **पुल्लिङ्गः, सप्तमी विभक्तिः, एकवचनम्**

ज्ञानिनाम् = **पुल्लिङ्गः, षष्ठी विभक्तिः, बहुवचनम्**

विविधतायाम् = **स्त्रीलिङ्गः, सप्तमी विभक्तिः, एकवचनम्**

तृतीयः पाठः

सर्वोत्तमः वरः

हिंदी अनुवाद

एकदा एकः ..... अचिन्तयत्।

अनुवाद—एक बार एक ऋषि नदी में जलतर्पण कर रहे थे। उस समय एक पक्षी आकाश में उड़ रहा था। उसके पैरों (पंजों) से अचानक एक चुहिया फिसली। वह उन ऋषि के हाथों में गिरी। दयालु ऋषि ने योगबल से उस चुहिया को लड़की के रूप में बदल दिया। वह ऋषि की पुत्री रूप में उनकी कुटी में रहने लगी। क्रमशः वह लड़की विवाह-योग्य हो गई। ऋषि ने सोचा संसार के सबसे शक्तिशाली वर (दूल्हे) के साथ इसका विवाह कराऊँगा।

तां ..... क्षिपति।"

अनुवाद—ऋषि उस पुत्री को लेकर सूर्य के पास गए।

उन्होंने सूर्य से प्रार्थना की—''हे सूर्य! आप संसार में सबसे तेजस्वी और शक्तिमान हैं। मेरी कन्या का पाणिग्रहण करो।'' सूर्य बोले—''मैं सबसे शक्तिमान नहीं हूँ। काला बादल मुझसे अधिक शक्तिशाली है। वह मेरे प्रकाश को ढकने में समर्थ है।'' इसके बाद ऋषि ने बादल से प्रार्थना की। बादल बोला, ''मैं सूर्य से अधिक शक्तिशाली हूँ। किंतु दक्षिणी पवन मुझसे अधिक शक्तिमान है। वह मुझे तिनके समान दूर फेंकता है।''

ऋषिः .....।''

अनुवाद—ऋषि ने दक्षिणी पवन से प्रार्थना की। पवन बोला—''मैं बादल से बलवान हूँ। किंतु पर्वतराज मुझसे भी अधिक शक्तिशाली है। वह मेरी गति को रोकने में समर्थ है।''

इसके बाद ऋषि ने पर्वतराज हिमालय से प्रार्थना की। पर्वतराज ने कहा—''मैं पवन से अधिक शक्तिशाली हूँ किंतु सबसे श्रेष्ठ नहीं हूँ।'' चूहों का राजा मुझसे अधिक शक्तिशाली है। वह मेरे शरीर को खोदता है। वह बहुत ही चतुर और युवा है। मैं तो बूढ़ा और मोटा हूँ।'' ऋषि उस कन्या को लेकर मूषकराज के पास गए और उससे प्रार्थना की।

मूषकराज बोला—''अवश्य ही मैं पर्वतों से शक्तिशाली हूँ। मैं आपकी कन्या का पाणिग्रहण करूँगा। किंतु .....।''

''भवान् ..... विवाहोऽभवत्।

अनुवाद—''आप चूहे, यह मानवी कन्या इसलिए आप चिंता करते हैं। मैं आपको भी योगबल से मानव रूप में बदल सकता हूँ।'' ऋषि बोले ''नहीं। मैं चूहे के रूप में ही ठीक हूँ। मैं इस पर्वत से भी अधिक चतुर हूँ, युवा हूँ, कार्य करने में सक्षम और शक्तिशाली हूँ। इसलिए अपने चूहे के रूप को बदलना नहीं चाहता हूँ। किंतु आपकी कन्या के लिए मेरा महल बहुत ही छोटा है। (भूमि में एक बिल उसका महल था) वह यहाँ कैसे रहेगी, मैं सोच रहा हूँ।''

''यहाँ चिंता नहीं करना'', ऋषि ने कहा। ऋषि ने योगबल से उस कन्या को फिर चुहिया बना दिया। तब सर्वोत्तम दूल्हे मूषकराज के साथ उसका विवाह हो गया।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) ऋषिः नद्यां जलतर्पणं करोति स्म।

(ख) ऋषेः हस्तयोः मूषिका अपतत्।

(ग) ऋषिः मूषिकां बालिकारूपेण परिवर्तितवान्।

(घ) सूर्यस्य अपेक्षया अधिकः शक्तिशाली मेघः अस्ति।

(ङ) पवनः मेघं तृणमिव क्षिपति।

(च) कथायानुसारेण सर्वतः शक्तिशाली मूषकः अस्ति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) एकदा एकः ऋषिः **नद्यां जलतर्पणं** करोति स्म।

(ख) तस्मिन् समये एकः खगः आकाशे **उड्डयते** स्म।

(ग) सा तस्य ऋषेः **हस्तयोः** अपतत्।

(घ) क्रमशः सा कन्या **विवाह** योग्या जाता।

(ङ) तां सुतामादाय ऋषिः सूर्यं **निकषा** अगच्छत्।

(च) मम कन्यायाः **पाणिग्रहणं** करोतु।

3. किसने कहा?

(क) ''पर्वतराजः मदपि अधिकः शक्तिशाली अस्ति।'' **मेघेन।**

(ख) ''कृष्णः मेघः मत्तः अधिकः शक्तिशाली अस्ति।'' **सूर्येण**

(ग) ''अहं भवतः कन्यायाः पाणिग्रहणं करिष्यामि।'' **मूषकराजेण**

(घ) ''मम कन्यायाः पाणिग्रहणं करोतु।'' **ऋषिणा**

(ङ) ''सः मां तृणमिव दूरं क्षिपति।'' **मेघेन**

4. निम्नलिखित धातुओं में 'तुमुन् प्रत्यय' जोड़कर पद बनाएँ और इनसे वाक्य बनाएँ—

(क) पठ् = **पठितुम्**
छात्राः विद्यालये **पठितुं** गच्छन्ति।

(ख) खाद् = **खादितुम्**
सिंहः मृगं **खादितुं** तस्य पृष्ठे धावति।

(ग) गम् = **गन्तुम्**
चिकित्सकः गृहे **गन्तुम्** उद्यतः आसीत्।

(घ) हस् = **हसितुम्**
प्रिया **हसितुम्** इच्छति स्म परं स्वजनकं दृष्ट्वा न अहसत्।

(ङ) ज्ञा = **ज्ञातुम्**
जनकः देश-विदेशानां समाचारान् श्रोतुं **ज्ञातुं** च दूरदर्शनं पश्यति।

(च) पिब् = **पातुम्**
बालकः नारङ्गरसं **पातुं** आपणे गच्छति।

(छ) नम् = **नमितुम्**
भक्ताः ईश्वराय **नमितुं** मन्दिरं प्रति प्रस्थिताः।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) अहं मेघात् बलवान् अस्मि।

(ख) ततः ऋषिः पर्वतराजं हिमालयं प्रार्थयत्।

(ग) अहं पवनात् अधिकः शक्तिशाली अस्मि परं सर्वोत्तमः नास्मि।

(घ) अहम् अस्मात् पर्वतात् अधिकः चतुरः युवा चास्मि।

(ङ) ऋषिः तां कन्यां नीत्वा मूषकराजस्य पार्श्वे अगच्छत्।

(च) अहं भवतः कन्यया सह विवाहं करिष्यामि।

(छ) भवतः कन्यायै मम प्रासादः अति लघु अस्ति।

(ज) अहं भवनृमपि मानवरूपे परिवर्तयितुं शक्नोमि।

6. हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) दयालु ऋषि ने योगबल से उस चुहिया को लड़की रूप में बदल दिया।

(ख) वह ऋषि की पुत्री के रूप में उनकी कुटी में रहने लगी।

(ग) संसार के सबसे शक्तिशाली वर (दूल्हे) के साथ इसका विवाह कराऊँगा।

(घ) उस पुत्री को लेकर ऋषि सूर्य के पास गए।

(ङ) क्या आप मेरी पुत्री का पाणिग्रहण करेंगे?

(च) मैं सूर्य से अधिक शक्तिशाली हूँ किंतु मुझसे भी अधिक शक्तिशाली पवन है।

(छ) अंत में ऋषि की कन्या का विवाह एक चूहे के साथ हुआ।

7. दिए गए शब्दों में उचित विभक्ति जोड़कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) आदौ ऋषिः **सूर्यं** निकषा अगच्छत्।

(ख) **कृष्णः** मेघः मत्तः अधिकः शक्तिशाली अस्ति।

(ग) पवनः अवदत्— ''अहं **मेघात्** बलवत्तरः अस्मि।''

(घ) अतः भवान् **चिन्तां** करोति।

(ङ) **मूषकराजेण** सह ऋषेः कन्यायाः विवाहः अभवत्।

8. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

सर्वोत्तमः	=	**सर्व + उत्तमः**
मदपि	=	**मत् + अपि**
सुतामादाय	=	**सुताम् + आदाय**
बिलमेकम्	=	**बिलम् + एकम्**
नाहम्	=	**न + अहम्**
सोऽतीव	=	**सः + अतीव**
पर्वतादपि	=	**पर्वतात् + अपि**

9. विग्रह करके समास का नाम लिखिए—

पाणिग्रहणम् = **पाणेः ग्रहणम् षष्ठी तत्पुरुष समास**

विवाहयोग्या = **विवाहाय योगया चतुर्थी तत्पुरुष समास**

सर्वोत्तमः = **सर्वेषु उत्तमः सप्तमी तत्पुरुष समास**

पर्वतराजः = **पर्वतानां राजः षष्ठी तत्पुरुष समास**

मूषकराजः = **मूषकाणां राजः षष्ठी तत्पुरुष समास**

10. निर्देशानुसार लकार बदलकर धातुरूप लिखिए—

	लट्	**लोट्**	**लङ**	**लृट्**
वसन्तु	=	**अनुवसन्तु**	**अन्वसन**	**अनुवसिष्यन्ति**
पठानि	=	**अनुपठानि**	**अन्वपठम्**	**अनुपठिष्यामि**
तिष्ठति	=	**अनुतिष्ठति**	**अन्वतिष्ठत्**	**अनुस्थास्यति**
क्रीडामि	=	**अनुक्रीडामि**	**अन्वक्रीडम्**	**अनुक्रीडिष्यामि**

चतुर्थः पाठः

डॉ० अब्दुल कलामः

हिंदी अनुवाद

डॉ० अबुल ..... करोति स्म।

अनुवाद—डॉ० अबुल पाकिर जैनुलब्दीन अब्दुल कलाम हमारे देश के राष्ट्रपति हुए हैं। वे एक महान वैज्ञानिक हुए हैं। इन महान वैज्ञानिक का जन्म तमिलनाडु प्रदेश के रामेश्वर नगर के धनुष्कोटि नाम के स्थान पर 1931 में अक्टूबर महीने की 15 तारीख में एक मछुआरे परिवार में हुआ था। इनके परिवार की आर्थिक अवस्था बहुत ही सामान्य थी। बचपन से ही वे प्रतिभासंपन्न और मेहनती थे। जिस बचपन में बच्चों की रुचि खेलने के प्रति होती है, उसी काल में वे अखबारों की बिक्री करके अपने परिवार को आर्थिक सहयोग करते थे।

अब्दुल कलामः ..... अभवत्।

अनुवाद—अब्दुल कलाम अध्ययन के प्रति गंभीर थे। सतत परिश्रम से तिरुचिरापल्ली नगर के सेंट जोसेफ विद्यालय से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण करके इन्होंने मद्रास तकनीकी संस्थान से वैज्ञानिक इंजीनियर की उपाधि ग्रहण की। इनके हृदय में अपने राष्ट्र के प्रति बहुत प्रेम है। ये अपने देश को विश्व के सबसे शक्तिशाली देशों के बीच में देखना चाहते हैं। इसलिए इन्होंने अपने जीवन को पूरी तरह से विज्ञान के

प्रति समर्पित कर दिया। 1958 में अब्दुल कलाम रक्षा अनुसंधान संगठन के सदस्य बने। पाँच वर्षों के बाद इन्होंने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में कार्य किया। 1962 में इन्होंने 'थुम्बा आक्वीटोरियल रॉकेट लॉचिंग' संस्थान में सेवा-कार्य किया। उस संस्थान में इन्होंने अनेक प्रक्षेपणों का प्रयोग किया जैसे—अग्नि, त्रिशूल, पृथ्वी, नाग और आकाश। एस० एल० बी० प्रक्षेपण के प्रयोग की सफलता से इनकी ख्याति दिन-प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त हुई। इस प्रकार 1981 में इन्होंने 'पद्मभूषण' तथा 1990 में 'पद्मविभूषण' सम्मान भी प्राप्त किया। अपने देश के रक्षामंत्री के सलाहकार के रूप में भी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए ये 'भारत-रत्न' अलंकरण से भी विभूषित हुए।

1998 तमे ..... गौरवः अस्ति।

अनुवाद—1998 में मई महीने में 11-12 तारीख में इनके निर्देशन में संपन्न परमाणु परीक्षण श्रृंखला अब्दुल कलाम की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० अब्दुल कलाम धर्म निरपेक्ष हैं। कुरान, भगवद्गीता जैसी पुस्तकों के प्रति इनके हृदय में समान निष्ठा है। ये सर्वथा शाकाहारी हैं और कभी भी धूम्रपान नहीं करते हैं। कविता-लेखन और वीणावादन के प्रति इनकी बड़ी रुचि है। ये बच्चों से बहुत स्नेह रखते हैं।

राष्ट्रपति के पद पर रहकर ये भारत को तकनीकी क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ पद पर देखना चाहते थे। भारत के पुराने गौरव को लौटाने के लिए ये अपने देशवासियों का आह्वान करते हैं और स्वयं भी राष्ट्र की उन्नति के प्रति प्रयत्नशील हैं। ये महाभाग हमारे देश का गौरव हैं।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) डॉ० अबुल पाकिर जैनुलब्दीन अब्दुल कलामः अस्माकं देशस्य राष्ट्रपतिः अभवत्।

(ख) डॉ० अब्दुल कलामस्य जन्म अक्टूबर मासस्य पञ्चदश तारिकायाम् एकस्मिन् मत्स्यजीवी की परिवारे अभवत्।

(ग) तस्य परिवारस्य आर्थिकावस्था अतिसामान्या अस्ति।

(घ) सः 1958 तमे वर्षे 'रक्षा अनुसंधान एवं विकास' संगठनस्य सदस्यः अभवत।

(ङ) डॉ० अब्दुल कलामः 1990 तमे वर्षे 'पद्म विभूषणं' सम्मानं प्राप्तवान्।

(च) कवितालेखनं वीणावादनं च प्रति तस्य महती रुचिः वर्तते।

(छ) डॉ० अब्दुल कलामः देशवासिनां भारतस्य पुरातनं गौरवं च परावर्तयितुम् आह्वानं करोति स्म।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) डॉ० अब्दुल कलामः अस्माकं देशस्य **राष्ट्रपतिः** अभवत्।

(ख) बाल्यकालादेव सः **प्रतिभासम्पन्नः** परिश्रमशीलश्च आसीत्।

(ग) 1958 तमे वर्षे सः **रक्षा अनुसंधान एवं विकास** संगठनस्य सदस्यः अभवत्।

(घ) सः **भारत रत्न** इति अलंकरणेनापि विभूषितः अभवत्।

3. सही पर (✓) तथा गलत पर (✗) का निशान लगाइए—

(क) डॉ० अब्दुल कलामः अस्माकं देशस्य मुख्यमंत्री अभवत्? (✗)

(ख) सः महान् वैज्ञानिकः अस्ति। (✓)

(ग) अस्य जन्म संभ्रांतपरिवारे अभवत्। (✗)

(घ) अब्दुल कलामः अध्ययनं प्रति गभीरः नासीत्। (✗)

(ङ) डॉ० अब्दुल कलामः सर्वदा शाकाहारी अस्ति। (✓)

(च) सः बालकेषु न स्निह्यति। (✗)

4. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए—

(क) सः एकः महान् वैज्ञानिकः आसीत्।

(ख) त्वं प्रतिभासम्पन्नः असि।

(ग) अहम् अध्ययनं प्रति गभीरः अस्मि।

(घ) ते बालकेषु अति स्निह्यन्ति।

(ङ) वयं धन्याः स्मः।

5. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

बाल्यकालादेव = **बाल्यकालात + एव**

कदापि = **कदा + अपि**

स्वयमपि = **स्वयम् + अपि**

अलंकरणेनापि = **अलंकरणेन + अपि**

सर्वाधिकः = **सर्व + अधिकः**

7. निम्नलिखित शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) अभित: = ग्रामम् **अभित:** वृक्षा: सन्ति।
(ख) अद्य = अध्यापका: **अद्य** भ्रमणाय देहलीनगरं गमिष्यन्ति।
(ग) कुत्र = भो राम! अद्य त्वं **कुत्र** गमिष्यसि?
(घ) अध: = वृक्षस्य **अध:** शशक: स्वपीति।
(ङ) यदा = अहं तु तदैव भोजनं करिष्यामि **यदा** भवान् आगमिष्यति।
(च) सर्वदा = डॉ० अब्दुल कलाम: **सर्वदा** बालकेषु स्नेह्यति।

8. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
(क) अब्दुल कलाम: अस्माकं देशस्य राष्ट्रपति: आसीत्।
(ख) स: एक: महान् वैज्ञानिक: अस्ति।
(ग) बाल्यकालादेव स: प्रतिभासम्पन्न: आसीत्।
(घ) कवितालेखने वीणावादने च तस्य महती रुचि: अस्ति।
(ङ) वयं भारतीया: तं राष्ट्रपतिरूपे प्राप्य धन्या: स्म:।

9. निम्नलिखित अव्यय शब्दों को पढ़िए और याद कीजिए—
उत्तर—(स्वयं कीजिए)।

पञ्चमः पाठः

वयं पञ्चाधिकं शतम्

हिंदी अनुवाद

एषः ..... आसन्।

अनुवाद—यह प्रसंग महाभारत काल का है। हस्तिनापुर में युधिष्ठिर और दुर्योधन के बीच में द्यूत-क्रीडा हुई। दुर्योधन के कपटपूर्वक खेल से युधिष्ठिर पराजित हो गए। खेल के नियम का अनुसरण करके युधिष्ठिर ने अपने भाइयों और द्रोपदी के साथ बारह वर्षों तक वन में वास किया।
वन-वन घूमते हुए पांडव कष्टपूर्वक वनवास का समय बिता रहे थे। एक समय वे द्वैतवन में थे। पांडवों के वनवास के कष्ट को और उनको चिढ़ाने की दुर्योधन की इच्छा थी। इसलिए पशुओं की गिनती के बहाने से दुर्योधन द्वैतवन में गया। उसके साथ उसके भाई, कर्ण, अनेक नौकर और सैनिक थे।

स्वभावेन ..... साधितम्।''

अनुवाद—दुर्योधन स्वभाव से अहंकारी और झगड़ालू था। वन में गंधर्वराज चित्रसेन के साथ किसी प्रसंग (घटना) में उसका झगड़ा हो गया। इस कारण उन दोनों के सैनिकों के बीच में भयंकर युद्ध हुआ। गंधर्वराज के कपट-युद्ध से दुर्योधन के सैनिक पराजित होकर भाग गए। कर्ण भी डरकर भाग गया। दुर्योधन और दूसरे लोग सिक्कड़ों से बाँध लिए गए। दुर्योधन के कुछ जीवित सैनिक सहायता के लिए वहाँ पास में रहने वाले पांडवों के पास दौड़े। दुर्योधन शत्रुओं के द्वारा बाँध लिया गया है, ऐसा समाचार उन्होंने पांडवों को निवेदन किया। यह सुनकर भीम बहुत खुश हुए। वह बोले—''दुष्ट दुर्योधन के लिए आज ठीक हुआ। गंधर्वराज की जय हो। जो हमें करना चाहिए था वह आज उसने पूरा कर दिया।''

भीमस्य ..... विमोचितवान्।

अनुवाद—भीम के व्यवहार से युधिष्ठिर नाराज हो गए। वे बोले—''भीमसेन! दुर्योधन शत्रुओं के द्वारा बाँध लिया गया है, इस समाचार से तुम्हारी प्रसन्नता ठीक नहीं है। कौरव सौ और पांडव पाँच इस प्रकार हम एक सौ पाँच भाई हैं। हम आपस में विवाद करते हैं और अपने विवाद का समाधान स्वयं करेंगे। किंतु यदि कोई तीसरा शत्रु लड़ने के लिए आए तो उस समय हम अलग-अलग नहीं हैं अपितु हम एक सौ पाँच ही हैं।''
युधिष्ठिर के इस वचन से भीम लज्जित हो गए। युधिष्ठिर द्वारा प्रेरित पांडवों ने गन्धर्वराज के ऊपर आक्रमण कर दिया। पांडवों को देखकर गंधर्वराज शांत हो गया। वह युधिष्ठिर को प्रणाम करके बोला—''दुष्ट कौरवों को अच्छी शिक्षा देने के लिए ही मैंने ऐसा किया। यदि आप ऐसा नहीं चाहते हैं तो मैं शीघ्र ही दुर्योधन को छोड़ता हूँ।'' इस प्रकार उसने दुर्योधन को छोड़ दिया।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—
(क) हस्तिनापुरे युधिष्ठिर-दुर्योधनयो: मध्ये द्यूतक्रीडा अभवत्।
(ख) पाण्डवा: वनवासकालं वनात् वनं भ्रमन्त: कष्टेन यापयन्ति स्म।
(ग) पाण्डवा: द्वैतवने आसन्।
(घ) पशूनां गणनाव्याजेन पाण्डवान् उपहासितुं दुर्योधन: वनम् अगच्छत्।
(ङ) गन्धर्वराजेन चित्रसेनेन सह दुर्योधनस्य कलह: जात:।

(च) गन्धर्वराज: पाण्डवान् दृष्ट्वा दुर्योधनं विमोचितवान्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) युधिष्ठिर: **स्वभ्रातृभि: द्रोपद्या सह च द्वादश** वर्षाणि वनवासमकरोत्।

(ख) दुर्योधन: **अहङ्कारी कलहप्रिय: च** आसीत्।

(ग) चित्रसेनस्य **कपटयुद्धेन** दुर्योधनस्य सैनिका: पराजिता:।

(घ) केचन सैनिका: सहायतार्थं **तत्र निकटे वसतां पाण्डवानां** पार्श्वे अधावन्।

(ङ) युधिष्ठिर: अवदत्, "वयं भिन्ना: भिन्ना: न स्म: अपितु वयं **पञ्चाधिकं** शतं स्म:।"

(च) **पाण्डवान्** दृष्ट्वा गन्धर्वराज: शान्तोऽभवत्।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) युधिष्ठिर: स्वभावेन सरल: शान्तिप्रियश्च आसीत्।

(ख) अनेक वर्षपर्यन्तं पाण्डवा: द्वैतवने आसन्।

(ग) एतद् ज्ञात्वा भीम: अति प्रसन्न: अभवत्।

(घ) युधिष्ठिर: अकथयत्, "वयं पञ्चाधिकं शतं स्म:।"

(ङ) दुर्योधने बद्धे सैनिका: पलायितवन्त:।

(च) अनया कथया एकताया: शिक्षा लभते।

4. निम्नलिखित जोड़े के शब्दों के आपसी भेद को वाक्य-प्रयोग द्वारा स्पष्ट कीजिए—

उपरि = वृक्षस्य **उपरि** वानरा: उपविष्टा: सन्ति।

अध: = वृक्षस्य **अध:** पथिक: शेते।

शत्रु: = श्रीरामस्य **शत्रु:** लङ्काधिपति: रावण: आसीत्।

मित्रम् = मम **मित्रं** देहल्यां पठति।

यत: = अस्माभि: मातृभूमे: प्राणपणेन रक्षा करणीया **यत:** एषा मातेव रक्षाति।

तत: = **तत:** पाण्डवा: गन्धर्वराजं पराजितवन्त:।

शान्त: = पाण्डवान् दृष्ट्वा गन्धर्वराज: चित्रसेन: **शान्त:** अभवत्।

क्रुद्ध: = दुर्योधनस्य दुर्व्यवहारेण चित्रसेन: **क्रुद्ध:** अभवत्।

स्म = सिंह: मृगमस्य पृष्ठे धावति **स्म**।

स्म: = जना: मन्दिरात् प्रवचनं श्रुत्वा आगच्छन्ति **स्म:**।

5. उचित प्रत्ययों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

अनुसृत्य = अनु-सृ + **ल्यप्**

उपहासितुम् = उप-हस् + **तुमुन्**

निवेदितवन्त: = नि-वेद् + **वान्**

भूत्वा = भू + **क्त्वा**

पराजित: = परा-जि + **क्त:**

प्रणम्य = प्र-नम् + **ल्यप्**

प्रदातुम् = प्र-दा + **तुमुन्**

6. निम्नलिखित को पढ़िए और समझिए—

उत्तर—(स्वयं कीजिए)।

षष्ठमः पाठः

गीतामृतम

हिंदी अनुवाद

विहाय ..... शान्तिमधिगच्छति।

अनुवाद—जो मनुष्य सभी इच्छाओं का त्याग कर इच्छा से रहित, निर्मोही और अहंकार से रहित रहता है, वह शांति को प्राप्त करता है।

यद्यदाचरति ..... लोकस्तदनुवर्तते।

अनुवाद—श्रेष्ठ जन अर्थात् सज्जन जैसा-जैसा आचरण करते हैं अर्थात् कार्य करते हैं, वैसे-वैसे ही दूसरे लोग भी करते हैं। श्रेष्ठ व्यक्ति जिस बात को सिद्ध करता है, लोग उसी का अनुसरण करते हैं।

न हि ..... विन्दति।

अनुवाद—इस संसार में नि:संदेह ज्ञान के समान पवित्र कुछ और नहीं है। जिसका योग भली-भाँति सिद्ध हो जाता है वह उस ज्ञान को समय से अपने आप में प्राप्त कर लेता है।

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं ..... पण्डिता:।

अनुवाद—जो शोक करने योग्य नहीं हैं, उनके लिए तुम शोक मत करो, विद्वान लोग कह रहे हैं कि जिनके प्राण चले गए हैं अर्थात् जो इस संसार में नहीं हैं और जो हैं, बुद्धिमान लोग उनके लिए शोक नहीं करते हैं।

प्रकृते: ..... मन्यते।

अनुवाद—प्रकृति के किए जाने वाले सभी कार्य गुणों से पूर्ण होते हैं। अर्थात् प्रकृति में जितने भी कार्य होते हैं, वे स्वाभाविक रूप से होते हैं। किंतु अहंकारी मूर्ख लोग इन सभी कार्यों को करने वाला स्वयं को मानते हैं। अर्थात् मैं ही सब कुछ हूँ।

दु:खेष्वनुद्विग्नमना: ..... उच्यते।

अनुवाद—दु:खों के आने पर जिसके मन में उद्वेग नहीं होता, सुखों के आने पर जिससे किसी वस्तु की इच्छा नहीं होती है और जो रोग, भय, क्रोध से सर्वथा रहित हो जाता है, ऐसे स्थिर बुद्धि को ही मुनि कहा जाता है।

वासांसि ..... देही।

अनुवाद—जिस प्रकार मनुष्य पुराने कपड़ों को उतारकर दूसरे नए कपड़े धारण करता है, पहनता है। उसी प्रकार आत्मा भी जीर्ण अर्थात् पुराने शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को प्राप्त करता है।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) य: जन: सर्वान् कामान् विहाय नि:स्पृह:, निर्मम: निरहङ्कार: च भवति स: एव शान्तिमधिगच्छति।

(ख) साधारण: जन: तदैव आचरति यत् यत् श्रेष्ठ: जन: आचरति।

(ग) य: गतासून् अगतासूंश्च न अनुशोचति स: एव पण्डित:।

(घ) य: दु:खेषु उद्विग्न: न भवति, सुखेषु नि:स्पृह: तिष्ठति, रागभयक्रोधात् च रहित: भवति स: एव स्थितधीर्मुनि: अस्ति।

(ङ) कर्ताहमिति मन्यते अहङ्कारी पुरुष:।

(च) शरीरस्य तुलना जीर्णै: वस्त्रै: सह कृता अस्ति।

2. रिक्त स्थानों को भरिए—

(क) विहाय **कामान् य: सर्वान् पुमांश्चरति नि:स्पृह:।**
निर्ममो **निरहङ्कार: स शान्तिधिगच्छति**।।

(ख) न हि **ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।**
तत्स्वयं योगसंसिद्ध: कालेनात्मनि विन्दति।

(ग) वासांसि **जीर्णानि यथा** विहाय
नवानि **गृह्णाति नरऽपराणि।**
तथा **शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि** संयाति
नवानि देही।

3. निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ लिखिए—

(क) **अशोच्यानन्वशोचस्त्वं ..... पण्डिता:।**
अनुवाद—जो शोक करने योग्य नहीं हैं, उनके लिए तुम शोक मत करो, विद्वान लोग कह रहे हैं कि जिनके प्राण चले गए हैं अर्थात् जो इस संसार में नहीं हैं और जो हैं, बुद्धिमान लोग उनके लिए शोक नहीं करते हैं।

(ख) **प्रकृते: ..... मन्यते।**
अनुवाद—प्रकृति के किए जाने वाले सभी कार्य गुणों से पूर्ण होते हैं। अर्थात् प्रकृति में जितने भी कार्य होते हैं, वे स्वाभाविक रूप से होते हैं। किंतु अहंकारी मूर्ख लोग इन सभी कार्यों को करने वाला स्वयं को मानते हैं। अर्थात् मैं ही सब कुछ हूँ।

(ग) **वासांसि ..... देही।**
अनुवाद—जिस प्रकार मनुष्य पुराने कपड़ों को उतारकर दूसरे नए कपड़े धारण करता है, पहनता है। उसी प्रकार आत्मा भी जीर्ण अर्थात् पुराने शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को प्राप्त करता है।

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) अस्माभि: दीर्घजना: सम्माननीया:।

(ख) निरहङ्कार: जन: शान्तिं प्राप्नोति।

(ग) विद्वांस: गतागतानां विषये न अनुशोचन्ति।

(घ) ये सदाचरिन्त, जना: तान् अनुसरन्ति।

(ङ) ज्ञानमिव पवित्रं किमपि वस्तु नास्ति।

5. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

कर्ताहमिति	=	**कर्ता + अहम् + इति**
कालेनात्मनि	=	**कालेन + आत्मनि**
शान्तिमधिगच्छति	=	**शान्तिम् + अधिगच्छति**
तदनुवर्तते	=	**तत् + अनुवर्तते**
पुमांश्चरति	=	**पुमान् + चरति**
नानुशोचन्ति	=	**न + अनुशोचन्ति**
नरोऽपराणि	=	**नर: + अपराणि**

सप्तमः पाठः

वीराङ्गना लक्ष्मीबाई

हिंदी अनुवाद

द्वौ अश्वौ ..... आसीत्।

अनुवाद—दो घोड़े और दो घुड़सवार। एक लड़का और एक लड़की। लड़की का घोड़ा अधिक तेजी से दौड़ता है। अचानक लड़का दौड़ते हुए घोड़े से गिरने वाला है। लड़की जल्दी से उसे उठाती है, अपने घोड़े पर बैठाती है और घर को वापस लौटती है। यह बहादुर लड़की थी 'मनु'।

यह मोरोपन्त ताम्बे जी की पुत्री थी। बाद में वही झाँसी की

रानी, वीरांगना लक्ष्मीबाई के नाम से प्रसिद्ध हुई। और वह बालक था पेशवा बाजीराव का पुत्र 'नाना साहिब।' मनु नाना साहिब की बहन के समान थी।

1835 ईसवीये ..... कार्यम् आसीत्।

अनुवाद—सन् 1835 ई० में वाराणसी में पैदा हुई मनु बचपन में ही मातृविहीन हो गई। मोरोपन्त उसे लेकर पेशवा बाजीराव के पास बिठूर आ गए। बाजीराव के पुत्रों के साथ बचपन में मनु ने भी भाला, तलवार चलाना और बंदूक का प्रयोग करना सीखा।

युवती मनु का झाँसी के नरेश गंगाधरराव के साथ विवाह हुआ। अब मनु झाँसी राज्य की रानी 'लक्ष्मीबाई' हो गई। रानी होकर भी वह स्वयं अस्त्र-शस्त्रादि चलाना और शारीरिक व्यायाम करती थीं। धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन और दानपुण्य उनका दैनिक कार्य था।

यथाकालं ..... अकुर्वन्।

अनुवाद—समय आने पर लक्ष्मीबाई के एक पुत्र हुआ। किंतु तीन महीने बाद ही वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। राजा ने झाँसी के सिंहासन के लिए 'दामोदर राव गंगाधर राव' नाम के बालक को दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया अर्थात् उसे गोद ले लिया। किंतु कुछ दिनों के बाद महाराज गंगाधर राव ही मृत्यु को प्राप्त हो गए। केवल अठारह वर्ष की आयु में लक्ष्मीबाई पुत्र और पति के वियोग से बहुत दु:खी हुईं। तब दुष्ट अंग्रेज शासकों ने उनके दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता प्रदान नहीं की। उत्तराधिकारी के अभाव में धोखे से उन्होंने झाँसी राज्य को अपने शासन के अधीन कर लिया।

एतद् ..... अमरा अभवत्।

अनुवाद—यह सन् 1857 का समय था। अंग्रेज शासकों के विरुद्ध भारत में सर्वप्रथम स्वतंत्रता-संग्राम शुरू हुआ। झाँसी राज्य की आजादी के लिए रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहिब, तात्या टोपे, बाबू कुँवर सिंह आदि ने साथ मिलकर अंग्रेज सैनिकों के साथ आमने-सामने का युद्ध किया। युद्धक्षेत्र में घोड़े पर सवार उनकी वीरता को देखकर शत्रु सैनिक भी आश्चर्यचकित हो गए। पुरुषवेश में जब वह घोड़े की पीठ पर बैठकर तलवार चलाती थीं तो वीर योद्धा युद्ध में केले के पेड़ के समान कटते और मरते थे।

मातृभूमि की रक्षा के लिए जीवन के अंतिम क्षण तक युद्ध करती हुईं लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हुईं। ये वीरांगना जन्मभूमि के गौरव के लिए ही इतिहास के पृष्ठों में हमेशा के लिए अमर हो गईं।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) लक्ष्मीबाई महोदयाया: बाल्यकालस्य नाम मनु: आसीत्।

(ख) लक्ष्मीबाई महोदयाया: पितु: नाम मोरोपन्त ताम्बे आसीत्।

(ग) लक्ष्मीबाई झाँसी राज्यस्य राज्ञी अभवत्।

(घ) आङ्ग्लशासका: झाँसी राज्यं प्रति छलम् अकुर्वन्।

(ङ) लक्ष्मीबाई आङ्ग्लशासकानां विरोधे सङ्ग्रामम् अकरोत्।

(च) मातृभूमे: रक्षायै लक्ष्मीबाई वीरगतिं लब्धवती।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) सेयम् आसीत् **वीरबालिका** मनु:।

(ख) मनु: नानासाहबस्य भगिनीव **आत्मीया** आसीत्।

(ग) यथाकालं लक्ष्मीबाई महोदयाया: एक: **पुत्र:** जात:।

(घ) परं मासत्रयेण एव स: **दिवंगत:**।

(ङ) आङ्ग्लाशासकान् विरुध्य भारते सर्वप्रथमं **स्वतन्त्रतासङ्ग्राम:** प्रारब्ध:।

(च) आङ्ग्लसैनिकै: सह साक्षात् **युद्धम्** अकरोत्।

3. हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) अचानक लड़का दौड़ते हुए घोड़े से गिरने वाला है।

(ख) यह बहादुर लड़की मनु थी।

(ग) मनु नानासाहब की बहन के समान थी।

(घ) समय आने पर लक्ष्मीबाई के एक पुत्र हुआ।

(ङ) कुछ दिनों के बाद महाराज गंगाधरराव भी मृत्यु को प्राप्त हो गए।

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) बाल्यकाले लक्ष्मीबाई नानासाहबेन सह क्रीडति स्म।

(ख) मनुम् आदाय मोरोपन्त: बिठूरे आगत:।

(ग) राज्ञी भूत्वापि लक्ष्मीबाई अस्त्र-शस्त्रादि संचालनं करोति स्म।

(घ) मनो: विवाह: झाँसी-नरेशेन गंगाधररावेन सह अभवत्।

(ङ) धार्मिक ग्रन्थानाम् अध्ययनं दानपुण्यं च तस्या: दैनिकं कार्यम् आसीत्।

(च) लक्ष्मीबाई महोदयाया: वीरत्वं दृष्ट्वा शत्रव: आश्चर्य चकिता: अभवन्।

5. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

मर्माहता	=	**मर्म + आहता**
इत्याख्यम्	=	**इति + आख्यम्**
अश्वारोहिणौ	=	**अश्व + आरोहिणौ**
सेयम्	=	**सा + इयम्**
भगिनीव	=	**भगिनी + इव**
प्रत्यावर्तते	=	**प्रति + आवर्तते**

अष्टमः पाठः

लखनऊ नगरम्

हिंदी अनुवाद

लखनऊ नगरम् ..... सचिवालयश्च।

अनुवाद—लखनऊ नगर उत्तर प्रदेश की राजधानी है। लखनऊ नगर प्राचीन काल में 'लक्ष्मणपुरम्' नाम से प्रसिद्ध था। किंवदन्ती है कि इस नगर की स्थापना राम के भाई लक्ष्मण के नाम से हुई थी। यह एक प्राचीन और रमणीय नगर है। यहाँ बहुत सारे दर्शनीय स्थान हैं, जैसे—1. रेजीडेंसी स्थल 2. लखनऊ विश्वविद्यालय 3. लखनऊ चिकित्सालय 4. इमामबाड़ा भवन और 5. सचिवालय।

इंद रेजीडेंसी ..... अपि अस्ति।

अनुवाद—यह रेजीडेंसी स्थल है। यह हमें देशभक्तों के आत्म-त्याग (बलिदान) को याद कराता है। अंग्रेजों के शासनकाल में यहाँ विदेशी आनंद से घूमते थे किंतु पहले स्वतंत्रता-संग्राम (1875 में) में भारतीयों ने अंग्रेजी शासन का विरोध किया। तब देश में अनेक स्थानों पर भारतीयों का अंग्रेज सैनिकों के साथ युद्ध हुआ। यहीं पर युद्ध में भारतभक्तों ने अपना रक्त बहाया, उनके त्याग से ही आजादी का एक सोपान (सीढ़ी) बना। इसी स्थल के पास में हो गोमती नदी के तट पर देशभक्तों के त्याग का एक स्मारक स्तंभ (शहीद स्मारक) भी है।

लखनऊ ..... चिकित्साविश्वविद्यालयः अस्ति।

अनुवाद—लखनऊ विश्वविद्यालय विद्या-प्रसार के लिए बहुत दूर तक प्रसिद्ध है। अब इस विश्वविद्यालय में अनेक छात्र अध्ययन करते हैं। यहाँ बहुत दूर से विभिन्न प्रदेशों से छात्र पढ़ने के लिए आते हैं। इस विश्वविद्यालय का पुस्तकालय 'टैगोर' नाम से प्रसिद्ध है।

यहीं एक चिकित्सा महाविद्यालय है जो उत्तर प्रदेश का प्रमुख चिकित्सा महाविद्यालय है। पहले यह चिकित्सा विश्वविद्यालय लखनऊ विश्वविद्यालय का अंग था किंतु अब स्वतंत्र रूप से चिकित्सा विश्वविद्यालय है।

कीदृशं ..... अपि कथ्यते।

अनुवाद—यह 'इमामाबाड़ा' भवन कितना मनोहर है। यह अवधशासकों का स्मारक है। इस भवन की छत बहुत बड़ी है, यह खंभों के बिना भी बहुत कौशल से बनी है। इसमें एक विचित्र सोपान मंडल है जिसमें आने वाले नए पर्यटक बहुधा रास्ता भूल जाते हैं। यह भवन अवध शासकों के वास्तुकला के प्रेम को प्रकट करता है।

लखनऊ नगर में सचिवालय भवन भी देखने योग्य है। इस भवन में विधानसभा के और विधान परिषद् के अधिवेशन होते हैं। इसी भवन में रहकर राज्य के मंत्री, सचिव और अन्य अधिकारी राज्य के कार्यों का संचालन करते हैं। सचिवालय में ही उत्तर प्रदेश का मुख्य कार्यालय है। इसी भवन में बहुत विशाल राजभवन है जो कि अधिक दूरी पर नहीं है, यहाँ उत्तर प्रदेश के राज्यपाल रहते हैं।

इस समय इस नगर में बहुत सारे रमणीय बाग हैं। इसलिए यह 'बागों का नगर' भी कहा जाता है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) एकस्तु लखनऊनगरम् उत्तर प्रदेशस्य राजधानी अस्ति अन्यच्च एतद् प्राचीनं सुरम्यं नगरम् अस्ति।

(ख) भारतभक्तैः स्वदेशस्य स्वतन्त्रतायै लखनऊ नगरे स्वरक्तं प्रवाहितम्।

(ग) इमामबाड़ा भवनं अवधशासकैः निर्मितम्।

(घ) विधानसभायाः अधिवेशनानि सचिवालयभवने भवन्ति।

(ङ) अस्माकं राज्यस्य राज्यपालः लखनऊनगरस्य राजभवने निवसति।

2. हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) लखनऊ नगर प्राचीन काल में 'लक्ष्मणपुरम्' नाम से प्रसिद्ध था।

(ख) यह एक प्राचीन और रमणीय नगर है।

(ग) इस समय इस नगर में बहुत सारे रमणीय बाग हैं।

(घ) यह भवन अवधशासकों के वास्तुकला के प्रेम को प्रकट करता है।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) लखनऊ नगरम् उत्तर प्रदेशस्य राजधानी अस्ति।

(ख) इदं एकं प्राचीनं सुरम्यं च नगरम् अस्ति।

(ग) इदम् अस्मान् देशभक्तानाम् आत्मत्यागं स्मारयति।

(घ) अत्र भारतीयै: स्वरक्तं प्रवाहितम्।

(ङ) लखनऊ विश्वविद्यालय: विद्यायै सुदूरं प्रसिद्ध: अस्ति।

(च) इदं भवनम् अवधशासकानां वास्तुकलानुरागं प्रकटयति।

(छ) अत: जना: एनम् 'उद्यानानां नगरम्' अपि कथयन्ति।

4. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए—

(क) साम्प्रतम् = सम्पूर्णे विश्वे साम्प्रतं पर्यावरणस्य समस्या मुख्यतया व्याप्ता अस्ति।

(ख) सुरम्याणि = अस्य उपवनस्य सुरम्याणि सुगन्धितानि पुष्पाणि जनानां चित्तं हरन्ति।

(ग) विस्मरन्ति = अध्यापक: छात्रान् मुहुर्मुहु: बोधयति परं ते पुनरपि विस्मरन्ति।

(घ) अनुराग: = मम हृदये स्वमातृ भूमिं प्रति महद् अनुराग: अस्ति।

(ङ) प्रवाहितम् = देशभक्तै: स्वतन्त्रतायै बहु रक्तं प्रवाहितम्।

5. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए—

जनश्रुति:	=	**किंवदन्ती**
सुरम्यम्	=	**रमणीय (बहुत सुंदर)**
प्रसाराय	=	**प्रसार के लिए**
नवागन्तुक:	=	**आने वाला नया व्यक्ति**

नवमः पाठः

अरण्यम्

हिंदी अनुवाद

अस्मिन् ..... साधयति।

अनुवाद—इस संसार में अनेक सुख हैं। वे जैसे—पुत्र-सुख, पत्नी-सुखी, धन-सुख और शरीर-सुख। किंतु शरीर सुख इन सबसे श्रेष्ठ है। स्वास्थ्य के बिना सभी सुख निरर्थक ही हैं। अस्वस्थ व्यक्ति कुछ भी नहीं कर सकता है। वह अपने कार्यों को पूरा करने में सक्षम नहीं होता है। लोग उसका आदर नहीं करते हैं और उसके वचनों का भी आदर नहीं किया जाता है। स्वस्थ व्यक्ति अपना हित साधता है, दूसरों के भी कार्यों को पूरा करता है।

स्वास्थ्यलाभाय ..... ज्ञानं वर्धते।

अनुवाद—स्वास्थ्य-लाभ के लिए लोग व्यायाम करते हैं। व्यायाम के अनेक प्रकार होते हैं। बच्चे आसान व्यायाम करते हैं। बूढ़े लोग आसन करते हैं। बूढ़े लोग सरलता से किए जाने वाले आसन भी करते हैं। जवान दौड़ते हैं। उनमें कुछ कठिन व्यायाम करते हैं। वे कुश्ती आदि करते हैं। घूमना भी श्रेष्ठ व्यायाम है। छात्र विद्यालय में खेलते हैं। यही उनका श्रेष्ठ व्यायाम है। वहाँ वे फुटबॉल, हॉकी आदि खेल खेलते हैं। खेलने से उनका व्यायाम होता है और अनुशासन की भावना बढ़ती है। इससे उनका ज्ञान बढ़ता है।

व्यायामस्य ..... लाभा: सन्ति।

अनुवाद—व्यायाम के अनेक लाभ हैं। व्यायाम से शरीर नीरोग होता है। इससे शरीर में रक्त का संचार ठीक तरह से होता है। रक्त का निर्माण व्यायाम से ही होता है। व्यायाम से अंग स्वस्थ होते हैं, बुद्धि निर्मल होती है। व्यायाम से मन प्रसन्नता को प्राप्त करता है। हमारी जठराग्नि (पाचन क्रिया) भी व्यायाम से ही प्रदीप्त होती है। वास्तव में व्यायाम के अनेक लाभ हैं।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) अस्मिन् संसारे पुत्र-सुखं, पत्नी-सुखं, धन-सुखं शरीर-सुखं च एतानि सुखानि सन्ति।

(ख) स्वस्थ: जन: निजहितं साधयति, परेषाम् अपि कार्याणि साधयति।

(ग) छात्राणां व्यायाम: क्रीडनेन भवति।

(घ) वृद्धा: सुगमं व्यायामं कुर्वन्ति।

(ङ) अनुशासनस्य भावना क्रीडनेन भवति।

(च) बालका: सुगमं व्यायामं कुर्वन्ति।

(छ) व्यायामेन शरीरं नीरोगं भवति, रक्त-संचार: सम्यग् भवति, अङ्गानि स्वस्थानि भवन्ति, बुद्धिर्निर्मला भवति, चेत: प्रसादं प्राप्नोति जठराग्नि: च प्रदीप्ता भवति। इत्येते लाभा: सन्ति व्यायास्य।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) स्वास्थ्यलाभाय जना: **व्यायामं** कुर्वन्ति।

(ख) अस्वस्थ: जन किमपि **कर्तुं न** शक्नोति।

(ग) वृद्धा: जना: **आसनानि** कुर्वन्ति।

(घ) भ्रमणमपि श्रेष्ठ: **व्यायाम:** अस्ति।

(ङ) छात्रा: विद्यालये **क्रीडन्ति**।

(च) व्यायामेन शरीरं **नीरोगं** भवति।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) व्यायामस्य अनेका: लाभा: सन्ति।

(ख) व्यायामेन अङ्गानि स्वस्थानि भवन्ति।

(ग) बालका: सुगमं व्यायामं कुर्वन्ति।

(घ) व्यायाम: प्रसन्नतां प्रददाति।

(ङ) युवान: धावनम् इति व्यायामं कुर्वन्ति।

(च) व्यायामेन रक्त-संचार: सम्यग् भवति।

(छ) व्यायामेन एव मानव-मन: प्रसन्नतामधिगच्छति।

4. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए—

नाद्रियते = **न + आद्रियते**

व्यायामस्यानेका: = **व्यायामस्य + अनेका:**

व्यायामेनाङ्गानि = **व्यायामेन + अङ्गानि**

बुद्धिर्निर्माणम् = **बुद्धि: + निर्माणम्**

जठराग्नि: = **जठर + अग्नि:**

5. सही कथन के सामने सही (✓) और गलत कथन के सामने गलत (✗) का चिह्न लगाइए—

(क) व्यायाम से व्यक्ति रोगी होता है। **(✗)**

(ख) बूढ़े व्यक्ति कुश्ती करते हैं। **(✗)**

(ग) बच्चे दौड़ते हैं। **(✓)**

(घ) युवकों के लिए भ्रमण एक अच्छा व्यायाम है। **(✓)**

(ङ) व्यायाम से कोई लाभ नहीं है। **(✗)**

6. निम्नलिखित शब्दों का पद-परिचय दीजिए—

अनेका: = **पुल्लिङ्ग: प्रथमा विभक्ति:, बहुवचनम्**

अंगानि = **नपुंसकलिङ्ग:, प्रथमा विभक्ति: बहुवचनम्**

चेत: = **नपुंसकलिङ्ग: प्रथमा विभक्ति: एकवचनम्**

अधिगच्छति = **प्रथम पुरुष:, एकवचनम्**

युवान: = **पुल्लिङ्ग: प्रथमा विभक्ति: बहुवचनम्**

कुर्वन्ति = **प्रथम पुरुष: बहुवचनम्**

7. समस्तपद का विग्रह करें और समास का नाम लिखिए—

समस्त पद:	**समास-विग्रह**	**समास:**
पुत्र-सुखम्	= **पुत्रस्य सुखम्**	**+ षष्ठी तत्पुरुष समास:**
अस्वस्थ:	= **न स्वस्थ:**	**+ नञ् तत्पुरुष समास:**
स्वास्थ्यलाभ:	= **स्वास्थ्याय लाभ:**	**+ चतुर्थी तत्पुरुष समास:**
जठराग्नि:	= **जठरस्य अग्नि:**	**+ षष्ठी तत्पुरुष समास:**

8. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) निरर्थक: = **व्यर्थ।**
य: जना: अस्वस्थ: भवति तस्य सकल: प्रयास: **निरर्थक:** भवति।

(ख) आद्रियते = **आदर किया जाता है**
असत्यवादिनां जनानां वचनं न **आद्रियते**।

(ग) नीरोग: = **रोग रहित।**
य: जन: प्रतिदिनं व्यायामं करोति पौष्टिकं भोजनं च करोति स: सदा **नीरोग:** भवति।

(घ) प्रसाद: = **प्रसन्नता।**
यदा रामाय सङ्गीतप्रतियोगितायां पुरस्कार: लब्ध: तदा स: **प्रसादम्** अधिगत:।

(ङ) प्रदीप्ता = **प्रदीप्त होना (बढ़ना)।**
व्यायामेन क्रीडनेन च जठराग्नि: **प्रदीप्ता** भवति।

(च) चेत: = **मन।**
वसन्ते प्रकृत्या: शोभां दृष्ट्वा **चेत:** प्रसन्नतां प्राप्नोति।

दशमः पाठः

कल्पना चावला

हिंदी अनुवाद

कल्पना चावलाया: ..... करोति स्म।

अनुवाद—कल्पना चावला का नाम सुनकर ही रोमांच और गौरव की अनुभूति पैदा होती है। वह भारत की प्रथम महिला अंतरिक्ष यात्री थीं।

कल्पना का जन्म हरियाणा राज्य के करनाल शहर में सन् 1961 में हुआ था। इनके पिता का नाम बनारसी दास और माता का नाम संयोगिता देवी था। भारत-पाक के विभाजन के समय वे पाकिस्तान देश से करनाल आ गए थे। इनके पिता व्यापार करते थे।

कल्पनायाः ..... उपाधिः प्राप्ता।

अनुवाद—कल्पना की प्राथमिक शिक्षा करनाल में स्थित टैगोर बालनिकेतन में हुई। इसके बाद इन्होंने पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज से वैमानिक इंजीनियरिंग विषय में उपाधि प्राप्त की।

वे बचपन में ही हवाई जहाज बनाने में रुचि रखती थीं। वे आकाशगंगा की निवासी होने के लिए अपना अधिकार मानती थीं। वैमानिक इंजीनियरिंग की उपाधि प्राप्त करके वे अमेरिका गईं। चावला के अनुसंधान की शुरूआत 'नासा एमेंस' अनुसंधान केंद्र में हुई। वहाँ उन्होंने पावर्ड लिफ्ट केप्यूटेशनल फ्लेइड डायनामिक्स के क्षेत्र में शोधकार्य किया। अर्लिंगटन में स्थित टैक्सस विश्वविद्यालय में उन्होंने विमान उड़ाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1988 में कोलोराडो विश्वविद्यालय से उन्होंने 'डॉक्टरेट' की उपाधि प्राप्त की।

कल्पना चावला ..... पृथ्वीं रक्षेम।

अनुवाद—कल्पना चावला ने सबसे पहले 1997 में नासा द्वारा भेजे गए अंतरिक्षयान में अंतरिक्ष की यात्रा की। दूसरी बार कोलंबिया अंतरिक्षयान से यात्रा की। यह यात्रा उनके जीवन की अंतिम यात्रा के रूप में बदल गई। वे अंतरिक्ष में 760 घंटे रहीं और अंतरिक्ष में 1.04 करोड़ किलोमीटर तक की यात्रा की। तकनीकी दोष के कारण बीच में ही 1 फरवरी 2003 को उनका अंतरिक्षयान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसी दुर्घटना में अंतरिक्ष की चमकती हुई सितारा कल्पना चावला की आकस्मिक मृत्यु हो गई।

उनका विचार था कि अंतरिक्ष यात्रा के समय ऐसा भाव आता है कि हम संसार से ऊपर हैं किंतु यथार्थ को नहीं भूलना चाहिए। उनका मानना था कि विपरीत परिस्थिति में भी लोग अपने सपने को साकार कर सकते हैं। उनका संदेश था कि हम प्रकृति की ध्वनि (आवाज) को सुनें और इस सुकोमल पृथ्वी की रक्षा करें।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) कल्पना चावला भारतदेशस्य प्रथमा महिला अंतरिक्षयात्री आसीत्।

(ख) कल्पना चावलायाः जन्म हरियाणा राज्यस्य करनाल-स्थाने 1961 तमे वर्षे अभवत्।

(ग) तस्याः प्राथमिकी शिक्षा करनाले स्थिते टैगोर बालनिकेतने अभवत्।

(घ) बाल्यावस्थायाम् अस्याः रुचिः वायुयान-निर्माणे अभवत्।

(ङ) सा अनुसन्धानार्थम् अमेरिका देशं गतवती।

(च) कल्पवना चावला सर्वप्रथमं 1997 तमे वर्षे अन्तरिक्षयात्रामकरोत्।

(छ) तस्याः सन्देशः आसीत् यत् वयं प्रकृत्याः ध्वनिं शृणुयाम स्वकीयां सुकोमलां पृथ्वीं च रक्षेम।

(ज) तकनीकीत्रुटिवशात् अस्याः अन्तरिक्षयानं दुर्घटनाग्रस्तम् अभवत्। अस्यां घटनायामेव सा दिवंगता।

2. रिक्त स्थान भरिए—

(क) कल्पना चावलायाः जन्म **हरियाणा राज्यस्य करनाल स्थाने 1961** तमे ईसवीये वर्षे अभवत्।

(ख) तस्याः पितुः नाम **बनारसीदासः** आसीत्।

(ग) सा **पंजाब इंजीनियरिंग महाविद्यालयात्** वैमानिक-इंजीनियरिंग इति विषये उपाधिं प्राप्तवती।

(घ) सा **आकाशगङ्गायाः** निवासिनीं भवितुं स्वीयम् अधिकारं मन्यते स्म।

(ङ) चावलायाः अनुसन्धानस्य प्रारम्भः **नासा एमेंस इति अनुसंधान केन्द्रे** अभवत्।

(च) अर्लिंगटनस्थिते **टेक्सस-विश्वविद्यालये** सा उड्डयनस्य प्रशिक्षणं प्राप्तवती।

(छ) तस्याः अन्तरिक्षयानं **1 फरवरी 2003** ईसवीये वर्षे दुर्घटनाग्रस्तम् अभवत्।

3. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति, वचन और लिङ्ग लिखिए—

शब्दः		विभक्तिः	वचनम्	लिङ्ग
प्रकृत्याः	=	**षष्ठी**	**एकवचनम्**	**स्त्रीलिङ्गः**
मातुः	=	**षष्ठी**	**एकवचनम्**	**स्त्रीलिङ्गः**
त्रुटिवशात्	=	**पञ्चमी**	**एकवचनम्**	**पुल्लिङ्गः**
गौरवस्य	=	**षष्ठी**	**एकवचनम्**	**पुल्लिङ्गः**
प्रेषिते	=	**सप्तमी**	**एकवचनम्**	**पुल्लिङ्गः**
संसारात्	=	**पञ्चमी**	**एकवचनम्**	**पुल्लिङ्गः**
स्थिते	=	**सप्तमी**	**एकवचनम्**	**पुल्लिङ्गः**
समये	=	**सप्तमी**	**एकवचनम्**	**पुल्लिङ्गः**

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) कल्पना चावला भारतस्य प्रथमा महिला अन्तरिक्षयात्री आसीत्।

(ख) सा आकाशगङ्गायाः निवासिनीः भवितुं स्व अधिकारं मन्यते स्म।

(ग) तया पावर्ड लिफ्ट केप्यूटेशनल फ्लेइड डायनामिक्स इत्यस्मिन् क्षेत्रे शोधकार्यं कृतम्।

(घ) तस्या: द्वितीया यात्रा तस्या: जीवनस्य अन्तिमा यात्रा आसीत्।

(ङ) अस्यां दुर्घटनायामेव तारकम् इव जाज्वल्य-मानाया: कल्पना चावलाया: आकस्मिका मृत्यु: अभवत्।

5. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

बाल्यावस्थायामेव = **बाल्य + अवस्थायाम् + एव**

इत्यस्य = **इति + अस्य**

त्रुटिवशात् = **त्रुटि + वशात्**

सुकोमलाम् = **सु + कोमलाम्**

6. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) विभाजनसमये = **बँटवारे के समय।**

भारत-पाकयो: **विभाजनसमये** अस्माकं परिवार: देहल्याम् आगत:।

(ख) शोधकार्यम् = **किसी विषय की जाँच करना।**

कल्पना चावलया पावर्डलिफ्ट केप्यूटेशनल फ्लेइड डायनामिक्स इत्यस्मिन् क्षेत्रे **शोधकार्यं** कृतम्।

(ग) उपाधि: = **किसी कार्य के लिए दिया जाने वाला एक सम्मान।**

कालान्तरे कल्पना चावला 'डॉक्टरेट' **इति उपाधि:** प्राप्नोत्।

(घ) अन्तरिक्षयात्रा = **अंतरिक्ष की यात्रा।**

कल्पनया 1997 तमे वर्षे प्रथम वां **अन्तरिक्षयात्रा** कृता।

(ङ) स्वप्न: = **सपना।**

मम **स्वप्न:** अस्ति यत् अहम् एक: कुशल: अभियन्ता: भवेयम्।

7. कल्पना चावला के विषय में पाँच वाक्य लिखिए—

कल्पना चावला भारत देशस्य प्रथमा महिला अन्तरिक्ष यात्री आसीत्।

अस्या: बाल्यावस्थायामेव वायुयान-निर्माणे रुचि: आसीत्।

कालान्तरे स: स्वस्वप्नं साकारं कृतवती अन्यच्च 1997 तमे वर्षे प्रथमवारं अन्तरिक्ष यात्रा कृतवती।

अस्या: अनुसारं अस्माभि: यथार्थं कदापि न विस्मर्तव्यम्।

जन: विपरीत परिस्थतौ अपि स्वस्वप्नं साकारं कर्तुं शक्नोति। अत: कदापि निराश: न भवितव्य:।

एकादशः पाठः

श्लोकाष्टकम्

हिंदी अनुवाद

अयं निजः ..... रिपवस्तथा।।

अनुवाद—यह मेरा है, यह उसका है, इस प्रकार की गणना छोटे लोग करते हैं जबकि उदार हृदय वालों के लिए सारी पृथ्वी ही परिवार है।

न किसी का कोई मित्र है न कोई किसी का शत्रु। व्यवहार से ही मित्र और शत्रु पैदा होते हैं।

नमन्ति ..... भवेत्।।

अनुवाद—फलदार पेड़ झुकते हैं, गुणी लोग भी झुकते हैं अर्थात् स्वभाव से विनम्र होते हैं। किंतु सूखे पेड़ और मूर्ख लोग कभी भी नहीं झुकते हैं।

विपत्ति पड़ने पर जो मित्र हमारी सहायता करते हैं वास्तव में वे ही मित्र होते हैं क्योंकि सुख के समय तो दुष्ट लोग भी मित्र हो जाते हैं।

परोक्षे ..... बलम्।।

अनुवाद—पीठ पीछे काम को खराब करने वाला और सामने आने पर मधुर बोलने वाला ऐसा जो मित्र होता है, उसे छोड़ देना चाहिए, क्योंकि वह वैसा ही होता है जैसे किसी घड़े के मुख पर दूध होता है लेकिन वह अंदर से जहर से भरा होता है।

कमजोर आदमी का बल राजा होता है, बच्चों का बल रोना होता है। मूर्ख आदमी का बल मौन है और चोरों का बल झूठ है।

यथा चतुर्भिः ..... विषवर्धनम्।।

अनुवाद—जैसे घिसने, छेतने, गर्म करने और पीटने से, इन चार प्रकार से सोने की परीक्षा की जाती है, वैसे ही पुरुष की परीक्षा त्याग, शील, गुण और कर्म इन चारों से से ली जाती है।

मूर्खों को उपदेश देना उनको शांत करने के लिए नहीं अपितु उनके क्रोध को बढ़ाने के लिए है, जैसे साँपों को दूध पिलाना केवल उनके जहर को बढ़ाना है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) उदारचरितानां कृते वसुधैव कुटुम्बकम्।

(ख) मित्राणि रिपवश्च व्यवहारेण जायन्ते।

(ग) शुष्कवृक्षाः मूर्खाश्च न नमन्ति।

(घ) त्यागेन, शीलेन, गुणेन कर्मणा च एतैः एव पुरुषः परीक्ष्यते।

(ङ) परोक्षे कार्यहन्तारं, प्रत्यक्षे प्रियवादिनं विषकुम्भं पयोमुखं सदृशं च मित्रं वर्जयेत्।

(च) बालानां बलं रोदनं मूर्खाणां च बलं मौनम् अस्ति।

(छ) चौराणां बलमस्ति अनृतम्।

2. निम्नलिखित श्लोकों की हिंदी में व्याख्या कीजिए—

(क) **अयं निजः ..... कुटुम्बकम्।**

अनुवाद—यह मेरा है, यह उसका है, इस प्रकार की गणना छोटे लोग करते हैं जबकि उदार हृदय वालों के लिए सारी पृथ्वी ही परिवार है।

(ख) **न कश्चित् ..... रिपवस्तथा।**

अनुवाद—न किसी का कोई मित्र है न कोई किसी का शत्रु, व्यवहार से ही मित्र और शत्रु पैदा होते हैं।

3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) नमन्ति = **नमन करते हैं (झुकने के अर्थ में)**

ये जनाः गुणिनः भवन्ति ते सदा **नमन्ति**।

(ख) परीक्ष्यते = **परीक्षा की जाती है।**

कश्चिदपि पुरुषः चतुर्विधः **परीक्ष्यते** यथा—त्यागेन शीलेन, गुणेन कर्मणा च।

(ग) वर्जयेत् = **छोड़ देना चाहिए।**

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् एतादृशं मित्रं शीघ्रमेव **वर्जयेत्**।

(घ) भवेत् = **होना चाहिए।**

सर्वेषां जनानां हृदये अन्यान् जीवान् प्रति दयाभावना अनुरागः च **भवेत्।**

(ङ) पयः = **दूध।**

यदि वयं सर्पान् **पयः** पाययिष्यामः तु तेषां केवलं विषवर्धनम् एव भविष्यति। सः अस्माकं मित्रं न भविष्यति।

(च) निजः = **अपना।**

अयं **निजः** तत् अपरस्य इत्येवं गणना लघुचेतासः कुर्वन्ति।

(छ) वसुधैव = **पृथ्वी ही।**

उदारचरितानां कृते तु सम्पूर्णा **वसुधैव** कुटुम्बकम् अस्ति।

4. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए—

वृक्षाः + च	=	**वृक्षाश्च**
मित्रम् + एव	=	**मित्रमेव**
कः + चित्	=	**कश्चित्**
चौराणाम् + अनृतम्	=	**चौराणामनृतम्**
मूर्खाः + च	=	**मूर्खाश्च**

5. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए—

कनकम्	=	**स्वर्णम्**
वृक्षः	=	**तरुः**
वसुधा	=	**धरा**
दुग्धम्	=	**क्षीरम**
मित्रम्	=	**सुहृद्**

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

विषम्	=	**अमृतम्**
रिपुः	=	**मित्रम्**
वसुधा	=	**गगनः**
दुर्जनः	=	**सज्जनः**
प्रत्यक्षे	=	**परोक्षे**

द्वादशः पाठः

श्रीरामचरितम्

हिंदी अनुवाद

आदिकविः ..... विवाहं कृतम्।

अनुवाद—आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने 'रामायण' की रचना की। इसलिए यह आदिकाव्य कहा जाता है। यहाँ भगवान श्रीराम का संपूर्ण चरित्र वर्णित किया गया है।

प्राचीन काल में अयोध्या में राजा दशरथ थे। उनकी तीन पत्नियाँ थीं—कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा। उनसे चार पुत्र हुए—कौशल्या के श्रीराम, कैकेयी के भारत, सुमित्रा के

लक्ष्मण और शत्रुघ्न। बचपन में इन सभी ने वेदादि सभी विद्याएँ पढ़ीं।

श्रीराम और लक्ष्मण विश्वमित्र के आश्रम गए। उन दोनों कुमारों ने विश्वामित्र से धनुर्विद्या सीखी। वहाँ अनेक राक्षसों को भी उन दोनों ने मारा। इसके बाद विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण मिथिला नगरी गए। वहाँ स्वयंवर में श्रीराम ने शिवजी के धनुष को तोड़कर राजा जनक की पुत्री सीता के साथ विवाह किया।

अयोध्यायां ..... शासनमकरोत्।

अनुवाद—अयोध्या में दशरथ ने श्रीराम का युवराज के रूप में अभिषेक करना चाहा। तभी कैकेयी ने श्रीराम के लिए चौदह वर्ष का वनवास और भरत के लिए युवराज पद के लिए दशरथ से प्रार्थना की। बहुत समय पहले दशरथ ने उसे दो वचन दिए थे। इसलिए पिता के वचन का पालन करने के लिए श्रीराम वन को गए। राम के वियोग से दशरथ ने प्राण छोड़ दिए। उस समय भरत अपने नाना के घर थे।

नाना के घर से वापस आने पर भरत श्रीराम के वन-गमन से बहुत ही क्षुब्ध हुए। उनको वनवास से वापस लाने के लिए वे चित्रकूट के जंगल में राम से मिले। किंतु श्रीराम पिता की आज्ञा का पालन करते हुए वन से नहीं लौटे। श्रीराम ने भरत को अपनी पादुका दे दीं। भरत ने पादुका सिंहासन पर रखकर श्रीराम के सेवक के समान शासन किया।

सीतालक्ष्मणाभ्यां ..... परमश्रद्धया पठन्ति।

अनुवाद—श्रीराम सीता और लक्ष्मण के साथ बहुत-से वनों में घूमकर पंचवटी के वन में रहने लगे। किंतु एक बार लंका के राजा रावण ने उस वन से धोखे से सीता का अपहरण कर लिया। उनके बिना श्रीराम व्याकुल हो गए। उन्होंने किष्किन्धा के वानरराज सुग्रीव के साथ मित्रता की। उनके मंत्री महावीर हनुमान ने लंका में जाकर सीता की खोज की।

श्रीराम, लक्ष्मण और वानर सेना के साथ समुद्र पर पुल बनाकर लंका को गए। वहाँ उन्होंने कुम्भकर्ण, मेघनाद आदि सभी बाँधवों के साथ दुष्ट रावण को मारा और सीता को प्राप्त किया। इसके बाद सीता और लक्ष्मण के साथ वे पुष्पक विमान से अयोध्या को वापस लौट आए।

अयोध्या में श्रीराम का राज्याभिषेक हुआ। राम प्रजा को बहुत ही खुश करने वाले थे। उनके राज्य में भय, अपराध, असामयिक मृत्यु, रोग, अनाचार आदि कुछ भी अनुचित कार्य नहीं था। सभी लोग सुख और सदाचारपूर्वक रहते थे। इसलिए आज भी रामराज्य को ही शासन का आदर्श मानते हैं। लोग आज भी 'रामायण' को बहुत ही श्रद्धा से पढ़ते हैं।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) आदिकविः महर्षिः वाल्मीकिः कथ्यते। सः 'रामायणम्' इति ग्रन्थं रचितवान्।

(ख) कैकेय्याः पुत्रः भरतः आसीत्।

(ग) विश्वामित्रेण सह रामलक्ष्मणौ मिथिलाम् अगच्छताम्।

(घ) भरतः वने श्रीरामं वनवासात् प्रत्यावर्तयितुं गतः।

(ङ) वानरराजेण सुग्रीवेण सह श्रीरामः मैत्रीम् अकरोत्।

(च) रावणं श्रीरामः अहनत्।

(छ) पुष्पकविमानेन श्रीरामः अयोध्यां प्रत्यागच्छत्।

(ज) श्रीरामस्य राज्ये भयः, अपराधः अकालमरणं, रोगः, अनाचारः इत्यादि किमपि न आसीत्।

2. दिए गए शब्दों के उचित रूपों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) **सुमित्रायाः** पुत्रः लक्ष्मणः आसीत्।

(ख) श्रीरामं विना दशरथस्य **प्राणाः** निर्गताः।

(ग) सीतालक्ष्मणाभ्यां सह श्रीरामः **पञ्चवट्यां** न्यवसत्।

(घ) श्रीरामः **भरताय** पादुके अयच्छत्।

(ङ) रावणः **छलेन** सीताम् अहरत्।

3. निर्देशानुसार शब्दरूप लिखिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) राजन् (षष्ठी एकवचन)
राज्ञः—राज्ञः जनकस्य सुतायाः नाम सीता आसीत्।

(ख) वानरः (तृतीया बहुवचन)
वानरैः—श्रीरामः **वानरैः** सहायतया समुद्रस्योपरि सेतु-निर्माणम् अकरोत्।

(ग) पादुका (द्वितीया द्विवचन)
पादुके—भरतः श्रीरामस्य **पादुके** नीत्वा अयोध्यां प्रत्यागच्छत्।

(घ) अयोध्या (सप्तमी एकवचन)
अयोध्यायाम्—श्रीरामस्य प्रत्यागमने **अयोध्यायां** जनैः धृतदीपकाः प्रज्वलिताः।

(ङ) रामलक्ष्मण (प्रथमा द्विवचन)
रामलक्ष्मणौ—विश्वामित्रेण सह **रामलक्ष्मणौ** मिथिला नगर्यां अगच्छताम्।

(च) तत् (पुंलिङ्ग, चतुर्थी एकवचन)
तस्मै—महर्षिणा वाल्मीकिना **तस्मै** आखेटकाय शापं दत्तम्।

4. दिए गए शब्दों में 'त्व' एवं 'तल्' प्रत्यय जोड़िए और उनके प्रथमा एकवचन के रूप लिखिए—

उच्च	=	**उच्चत्वम्**	**उच्चता**
स्थूल	=	**स्थूलत्वम्**	**स्थूलता**
दुर्बल	=	**दुर्बलत्वम्**	**दुर्बलता**
स्थिर	=	**स्थिरत्वम्**	**स्थिरता**
लघु	=	**लघुत्वम्**	**लघुता**

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
(क) अयोध्याया: नृप: दशरथ: आसीत्।
(ख) रामेण सह सुग्रीवेण मैत्री कृता।
(ग) भरतेन सिंहासने श्रीरामस्य पादुके स्थाप्य शासनं कृतम्।
(घ) रामस्य राज्ये सर्वे सुखेन वसन्ति स्म।
(ङ) अद्यापि रामराज्यं शासनस्य आदर्श: मन्यते।

त्रयोदशः पाठः

डॉ० राजेन्द्र प्रसादः

हिंदी अनुवाद

देशरत्नं ..... मेधावी आसीत्।

अनुवाद—देशरत्न डॉ० राजेंद्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति थे। उसका कार्यकाल लगभग दस वर्षों का था। उस समय देश की प्रगति उत्तम थी।

राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 1884 में दिसंबर महीने की तीसरी (3-12-1884) तारीख में बिहार के सारण जिले में जीरादेई गाँव में हुआ था। शिक्षा के प्रारंभिक काल से ही ये बहुत मेधावी थे।

1990 ईसवीये ..... जनसेवामकरोत्।

अनुवाद—1990 ई० में 'इण्ट्रेंस' परीक्षा में इन्होंने पूरे कोलकाता विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इन्होंने एम० ए०, एल० एल० बी० की परीक्षा में भी सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। सभी उनकी योग्यता और विद्वत्ता से मुग्ध थे। शिक्षा समाप्त करके ये पहले कोलकाता में, इसके बाद पटना नगर में अधिवक्ता (वकील) हुए। वकीलों में इनकी प्रतिष्ठा उत्तम और धनार्जन अधिक था।

किंतु महापुरुषों का जीवन अपने सुख के लिए नहीं होता है। महापुरुष तो सभी के सुख और हित के लिए जीते हैं। 1917 ई० में बिहार के चम्पारण में गांधी जी ने अंग्रेज शासन के विरोध में आंदोलन शुरू किया। तब राजेंद्र महोदय उनके शिष्य हो गए। उन्होंने वकील का पद और धनार्जन छोड़ दिया और देश-सेवा का व्रत स्वीकार किया। 1934 ई० में जब बिहार में भयंकर भूकंप आया था तब उन्होंने लोगों की बहुत सेवा की।

भारतस्य ..... अनुकरणीय-मेवास्ति।

अनुवाद—भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में गांधी जी के अनुयायियों में राजेंद्र महोदय विशेष थे। वे निष्ठावान, उत्साही, मेहनती और स्वतंत्रता-संग्राम के सेनानी थे। 1921 ई० के असहयोग आंदोलन में, 1942 ई० के भारत छोड़ो आंदोलन में और दूसरे स्वतंत्रता आंदोलन में उन्होंने बहुत बार जेल की यातना सही। 1947 ई० में जब देश आजाद हुआ तब राजेंद्र महोदय पहले खाद्यमंत्री हुए। इसके बाद उन्होंने देश के प्रथम राष्ट्रपति का पद अलंकृत किया। 28 फरवरी 1963 में उनका देहावसान हो गया। राजेंद्र प्रसाद स्वभाव से सरल और मधुर भाषी थे। वे भारतीय संस्कृति के प्रशंसक और संवर्धक थे। 'सादा जीवन उच्च विचार' इस भावना के वे प्रत्यक्ष उदाहरण थे। उन्होंने आजीवन भारतीय वस्त्र पहने। सत्य और सरलता उनके जीवन के मंत्र थे। इन महापुरुष की महान देश-सेवा और उत्तम चरित्र हम सभी के लिए अनुकरणीय है।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—
(क) डॉ० राजेन्द्र प्रसादस्य जन्म बिहार प्रान्ते अभवत्।
(ख) 'इण्ट्रेन्स' परीक्षायाम् अयं सम्पूर्णे कोलकाता विश्वविद्यालये प्रथमं स्थानं प्राप्तवान्।
(ग) बिहारे भीषण: भूकम्प: 1934 ईसवीये आगत:।
(घ) राजेन्द्र महोदय: निष्ठावान्, उत्साही, परिश्रमी च स्वतन्त्रता सङ्ग्राम सेनानी आसीत्।
(ङ) स: भारतीय संस्कृते: प्रशंसक: आसीत्।
(च) सत्यं सरलता च इत्येतौ जीवनमन्त्रौ आस्तां राजेन्द्र महोदयस्य।
(छ) अस्माभि: अस्य महापुरुषस्य महती देशसेवा उत्तमं च चरित्रम् अनुकरणीयम्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
(क) राजेन्द्र प्रसादस्य जन्म **1884** ईसवीये दिसम्बर

मसस्य तृतीयदिनाङ्के बिहारस्य **सारणमण्डले** 'जीरादेई' ग्रामेऽभवत्।

(ख) शिक्षाया: प्रारम्भकालत: एव एषोऽतीव **मेधावी** आसीत्।

(ग) महापुरुषाणां जन्म **आत्मासुखामय** न भवति।

(घ) राजेन्द्रप्रसाद: स्वभावेन सरल: **मधुरभाषी च आसीत्**।

(ङ) स: भारतीयसंस्कृते: **प्रशंसक: संवर्धक: च** आसीत्।

(च) तेन आजीवनं **भारतीयवस्त्रं** धारितम्।

3. हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे।

(ख) शिक्षा के प्रारंभिक काल से ही ये बहुत मेधावी थे।

(ग) शिक्षा समाप्त करके ये पहले कोलकाता में, इसके बाद पटना नगर में उच्च न्यायालय में वकील हुए।

(घ) वकीलों में उनकी प्रतिष्ठा उत्तम और धनार्जन बहुत अधिक था।

(ङ) इसके बाद उन्होंने देश के प्रथम राष्ट्रपति के पद को अंलकृत किया।

(च) भारत के स्वतंत्रता संग्राम में गांधी जी के अनुयायियों में राजेन्द्र महोदय विशिष्ट थे।

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद: अस्माकं देशस्य प्रथम: राष्ट्रपति: आसीत्।

(ख) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद: एक: प्रमुख: स्वतन्त्रता-सेनानी आसीत्।

(ग) गान्धि महाभागेन सह राजेन्द्र प्रसाद: कारवासे अपि अगच्छत्।

(घ) महापुरुषाणां जीवनं सरलं विचारा: च उन्नता: भवन्ति।

(ङ) शिक्षां समाप्य डॉ० राजेन्द्र प्रसाद: उच्च न्यायालये अधिवक्ता अभवत्।

5. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

अध्यापकोऽपि	=	**अध्यापक: + अपि**
सत्याग्रहम्	=	**सत्य + आग्रहम्**
अस्माभिरेव	=	**अस्माभि: + एव**
किञ्चित्	=	**किम् + चित्**
स्वागतम्	=	**सु + आगतम्**
अत्यधिकम्	=	**अति + अधिकम्**

चतुर्दशः पाठः

अहंकारी शशकः

हिंदी अनुवाद

एकस्मिन् ..... उपगच्छति।

अनुवाद—एक जंगल में एक खरगोश रहता था। वह बहुत घमंडी था। एक बार एक कछुए ने उसे देखा और पूछा, ''मित्र! कहाँ जा रहे हो?''

खरगोश ने कहा—मैं एक तालाब पर जा रहा हूँ।

कछुआ—मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

खरगोश—(हँसा और उससे कहा) तुम धीरे-धीरे जाते हो, मैं तेजी से चलता हूँ, मेरे साथ तुम्हारा जाना कैसे संभव है? तुम मेरे साथ जाने में कभी भी समर्थ नहीं हो।

कछुआ—मैं तेजी से चलता हूँ या मंदगति से, किंतु तालाब पर जल्दी पहुँच जाऊँगा।

खरगोश—यह कैसे संभव है? मेरे साथ तुम्हारा जाना कभी भी संभव नहीं है।

कछुआ—तो फिर हम दोनों चलते हैं और देखते हैं कि कौन तालाब पर जल्दी पहुँचता है।

तदा तौ ..... पर्वतलङ्घनम्।''

अनुवाद—तब वे दोनों चलते हैं। खरगोश तेज दौड़ता है, वह थक जाता है। कुछ सोचकर उसने रास्ते में विश्राम किया। कछुआ तेजी से नहीं दौड़ता है, किंतु वह लगातार चलता है और तालाब पर जल्दी पहुँच जाता है। खरगोश वहाँ देर से पहुँचता है। कछुआ विजयी हुआ। लगातार कोशिश करने वाला ही हमेशा जीतता है। और कहा है—

''रास्ते पर धीरे-धीरे चलते रहो, धीरे-धीरे बढ़ते रहो क्योंकि धीरे-धीरे ही पर्वत को लाँघा जा सकता है।''

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) शशक: गर्वित: आसीत्।

(ख) शशक: वेगेन अधावत्।
(ग) कच्छप: मन्दगत्या अचलत्।
(घ) निरन्तरं चलनेन कच्छप: विजयी अभवत्।
(ङ) शशक: अत: पराजित: यतोहि स: वेगेन धावति श्रान्त: च भवति येन मार्गे विश्रामं करोति।

2. रिक्त स्थान भरिए—
(क) शशक: **वेगेन** धावति।
(ख) कच्छप: वेगेन न **धावति।**
(ग) मया सह तव **गमनं** न कदापि सम्भवम्।
(घ) कच्छप: **विजयी** अभवत्।
(ङ) निरन्तरं **यत्नशील: एव** सदा जयति।

3. निर्देशानुसार शब्द रूप लिखिए—

शशक:	तृतीया	द्विवचन	= **शशकाभ्याम्**
कच्छप:	सप्तमी	एकवचन	= **कच्छपे**
सरोवरम्	प्रथमा	बहुवचन	= **सरोवरा:**
जलाशय:	चतुर्थी	बहुवचन	= **जलाशयेभ्य:**

4. हिंदी में अनुवाद कीजिए—
(क) वह बहुत घमंडी था।
(ख) खरगोश तेजी से दौड़ता है, वह थक जाता है।
(ग) उसने रास्ते में विश्राम किया।
(घ) खरगोश देर से वहाँ आता है।
(ङ) कछुआ विजयी हुआ।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
(क) कस्मिंश्चिद् वने एक: गर्वित: शशक: निवसति स्म।
(ख) एकदा स: एकेन कच्छेपन अपश्यत्।
(ग) कच्छप: अकथयत्, "मित्र! कुत्र गच्छसि?"
(घ) अहं वेगेन चलामि, त्वया सह मम गमनं सम्भवं नास्ति।
(ङ) शशक: शीघ्रं-शीघ्रम् अचलत् श्रान्तो भूत्वा च विश्राममम् अकरोत्।
(च) कच्छप: शनै:-शनै: अचलत् परं निरन्तरम् अचलत्।
(छ) अन्ते कच्छप: विजित:।

6. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—
(क) वेगेन = शशक: **वेगेन** धावति परं पुनरपि पराजितो भवति।
(ख) मन्दगत्या = कच्छप: **मन्दगत्या** चलति परं निरन्तरं चलति।
(ग) शशक: = **शशक:** अति गर्वित: आसीत्।
(घ) उपगच्छति = कच्छप: शनै:-शनै: जलाशयम् **उपगच्छति**।
(ङ) कच्छप: = **कच्छप:** शशकं दृष्ट्वा तेन सह वार्तालाप: करोति।
(च) जलाशयम् = तस्मात् स्थानात् **जलाशयं** दूरम् आसीत्।

पञ्चदशः पाठः

महर्षिः दयानन्दः

हिंदी अनुवाद

गुणानामाधारो ..... भास्कररुचि:।।

अनुवाद—गुणों के आधार अर्थात् भंडार, वेदों के जानने वाले, शास्त्रार्थ में निपुण, पतित लोगों का उद्धार करने वाले, लोगों के मन को हरने वाले, अपनी आत्मा को पूरी तरह से स्वार्थ रहित होकर दूसरों के कल्याण में लगाने वाले, सूर्य के समान उज्ज्वल स्वामी दयानन्द की इस संसार में जय हो।

अयं ..... वनमागात्।

अनुवाद—इन महात्मा ने गुजरात राज्य के टंकारा गाँव में 1824 ई० में जन्म लिया। इनके पिता कर्षण तिवारी और माता रुक्मिणी थीं। शास्त्रविधि का अनुसरण करते हुए इनके पिता ने दसवें दिन इनका मूलशंकर (मूल जी) नामकरण किया। आठवें वर्ष में इनका उपनयन संस्कार किया। तेरह साल के होने पर पिता ने इन्हें शिवरात्रि का व्रत रखने का आदेश दिया। शिवरात्रि के व्रत के समय रात में इन्होंने शिवलिंग पर चढ़ाए गए प्रसाद आदि को खाते हुए एक चूहे को देखा। तब चिंता में घिरे मन में मचे द्वंद्व से इन्होंने पिता से शिव के सच्चे स्वरूप के विषय में पूछा—"क्या यह मूर्ति रूप शिव सत्य है! या फिर सत्य शिव कोई दूसरा ही है?" इसके पिता इनकी जिज्ञासा का समाधान करने में समर्थ नहीं हो सके। तब उन्होंने सच्चे शिव को खोजने की प्रतिज्ञा की। घर में अपनी बहन और चाचा के निधन को देखकर, कैसे मोक्ष की प्राप्ति हो और जन्म-मृत्यु के बंधन से निवृत्त हों, यह वैराग्य उत्पन्न हो गया। वे घर और माता-पिता को छोड़कर वन में आ गए।

ततो ..... समुन्मूलय" इति।

अनुवाद—इसके बाद हिमालय में जाकर तप किया और बाद में यतीश्वर (संन्यासियों के संन्यासी) विरजानंद जी की

प्रसिद्धि सुनकर उनके पास पहुँचे। उन ज्ञानरूपी सूर्य से व्याकरण आदि का अध्ययन किया। वेद शास्त्रादि की शिक्षा प्राप्त करके गुरु-दक्षिणा के रूप में उन्हें लौंग दीं और गुरु ने आदेश दिया—''वेदविद्या का प्रकाश करो, शास्त्रों का ज्ञान फैलाओ, संसार में वैदिक धर्म की ज्योति प्रज्वलित करो, जो शास्त्र सही हैं उनका उद्धार करो, विभिन्न मतों में फैली अविद्या रूपी रात्रि को हटाओ, पाखंडियों को जड़ से उखाड़ फेंको।''

काश्यां ..... अयात्।

अनुवाद—10 नवंबर, 1869 ई० में काशी में 'मूर्तिपूजा वेद विरुद्ध' इस विषय को आधार मानकर इनका काशी के विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ हुआ और वहाँ विजय श्री ने इन्हें वरण किया। उनकी विजय का उद्घोष उस समय के पायोनियर, हिन्दुज्ञानदायिनी जैसे समाचार-पत्रों ने फैलाया। उन्होंने 12 अप्रैल, 1875 ई० में मुंबई नगरी में सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना की। भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों में प्रचारादि विधि के द्वारा इन्होंने वैदिक धर्म के सिद्धांतों का प्रसार किया। जोधपुर नगर में 29 सितंबर, 1883 ई० में नन्हीं नाम की वेश्या के वश में होकर इनके रसोइये जगन्नाथ ने इन्हें दूध में विष मिलाकर दे दिया। और उसके बाद 30 अक्टूबर, 1883 ई० में मंगलवार के दिन दीपावली के पर्व पर ज्ञान के भंडार ये यतीश्वर इस भौतिक शरीर और यश को छोड़कर चले गए।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) महर्षि दयानन्दस्य जन्म गुर्जर प्रान्तान्तर्गते टंकारा ग्रामे 1824 ईसवीये अभवत्।

(ख) शिवरात्रि व्रतकाले दयानन्दः रात्रौ अपश्यत् यत् एकः मूषकः शिवोत्तमाङ्गम् आसाद्य नैवेद्यम् अश्नाति।

(ग) स्वभगिन्याः पितृव्यस्य च निधनं विलोक्य दयानन्दस्य मनसि वैराग्यः उद्भूतः।

(घ) यतीश्वर विरजानन्दस्य ख्यातिं संश्रुत्य दयानन्दः तस्य पार्श्वें गतः।

(ङ) 10 नवंबर, 1869 ईसवीये 'मूर्तिपूजा वेदविरुद्धा' इति विषये काशीस्थैर्विद्वद्भिः सहदयानन्दस्य शास्त्रार्थः अभवत्।

(च) 30 अक्टूबर, 1883 ईस्वीये मङ्गलवासरे दीपावलि पर्वणि अनेन महात्मना भौतिकशरीरम् अत्यजत्।

2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—

(क) शास्त्रविधिम् अनुसृत्य जनकोऽस्य दशमेऽनि **मूलशंकर** इति नामधेयम् अकरोत्।

(ख) गृहे स्वभगिन्याः पितृव्यस्य च **निधनं** विलोक्य कथं **मोक्षवाप्तिः** जन्ममृत्युबन्धननिवृत्तिश्च स्यादिति **वैराग्यम्** उद्भूतः।

(ग) तस्य विजयोद्घोषस्तदानीन्तनैः **समाचार-पत्रैः** पायोनियर-हिन्दु-ज्ञानदायिनी-प्रभृतिभिः प्रसारितः।

(घ) सः **12** अप्रैल, **1875** ईसवीये **मुम्बापुर्यां** सर्वप्रथम् आर्यसमाजम् अस्थापयत्।

(ङ) ततश्च सः 30 अक्टूबर, 1993 ईसवीये **मङ्गल** वासरे **दीपावलि** पर्वणि ज्ञानराशिर्यतीश्वराऽयं भौतिकशरीरं विहाय **यशः शेषताम्** अयात्।

3. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य-रचना संस्कृत में कीजिए—

(क) पितरौ = श्रवणकुमारः **पितरौ** स्वस्कन्धे निधाय तीर्थयात्रायै प्रस्थितः।

(ख) आसाद्य = एकः मूषकः शिवोत्तमाङ्गम् **आसाद्य** नैवेद्यम् अश्नाति।

(ग) अन्वेष्टुम् = दयानन्दः सत्यं शिवम् **अन्वेष्टुम्** बहुषु स्थानेषु साधूनां च पार्श्वें गतः।

(घ) परित्यज्य = महात्मा बुद्धः निर्वाण-प्राप्त्यर्थं राज प्रासादं **परित्यज्य** वने अगच्छत्।

(ङ) मोक्षवाप्तिः = दयानन्दस्य मनसि स्वभगिन्याः निधनं विलोक्य **मोक्षवाप्तिः** कथं भवेत् इति वैराग्यः उद्भूतः।

(च) पाचकः = महर्षेः **पाचकः** नन्हीं वेश्यायाः वशोभूत्वा तस्मै विषम् अददात्।

4. निम्नलिखित शब्द-रूपों के लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन लिखिए—

शब्दरूपः		**लिङ्गः**	**विभक्तिः**	**वचनम्**
पितरम्	=	**पुल्लिङ्गः**	**द्वितीया**	**एकवचनम्**
भुवने	=	**पुल्लिङ्गः**	**सप्तमी**	**एकवचनम्**
शासत्राणि	=	**नपुंसकलिङ्गः**	**द्वितीया**	**बहुवचनम्**
समाचारपत्रैः	=	**नपुंसकलिङ्गः**	**तृतीया**	**बहुवचनम्**
जोधपुरनगरे	=	**नपुंसकलिङ्गः**	**सप्तमी**	**एकवचनम्**
काश्याम्	=	**स्त्रीलिङ्गः**	**सप्तमी**	**एकवचनम्**
सम्वत्सरे	=	**पुल्लिङ्गः**	**सप्तमी**	**एकवचनम्**
तृप्तिम्	=	**स्त्रीलिङ्गः**	**द्वितीया**	**एकवचनम्**

5. निम्नलिखित शब्दों का परस्पर मेल कीजिए—

जनकोऽस्य	**ततोऽस्य**
अद्राक्षीत्	**अपश्यत्**
गृहे	**आवासे**
काश्याम्	**वाराणस्याम्**
मूर्तिपूजा	**प्रतिमार्चना**
विहाय	**त्यक्त्वा**

6. उदाहरण का अनुसरण करके रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

दीपावली — **दीपावल्यौ दीपावल्यः दीपावल्याम्**
जोधपुरी — **जोधपुर्यौ जोधपुर्यः जोधपुर्याम्**
मुम्बईपुरी — **मुम्बईपुर्यौ मुम्बईपुर्यः मुम्बईपुर्याम्**
पातकी — **पातक्यौ पातक्यः पातक्याम्**
ज्ञानदायिनी — **ज्ञानदायिन्यौ ज्ञानदायिन्यः ज्ञानदायिन्याम्**

षोडशः पाठः

वीरः अब्दुल हमीदः

हिंदी अनुवाद

भारतवसुन्धरा ..... स्थानम् अलभत्।

अनुवाद—सारे संसार में प्रसिद्ध है कि भारतभूमि शूरवीरों की जननी है। प्राचीन काल से आज तक असंख्य वीरों ने भारतभूमि पर जन्म लिया। उनमें अब्दुल हमीद का नाम बहुत श्रद्धा से याद किया जाता है। इस वीर श्रेष्ठ का जन्म 1933 ई० में उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में 'धामपुर' नामक गाँव में हुआ था। इनकी पारिवारिक स्थिति बहुत सामान्य थी। बचपन से ही अब्दुल हमीद की रुचि कुश्ती, लाठी चलाने और लक्ष्यभेद करने में थी। इसलिए सतत अभ्यास से इन खेलों में ये बहुत कुशल हो गए।

अब्दुल हमीद ने 1954 ई० में दिसंबर महीने की सातवीं तारीख में भारतीय सेना में प्रवेश पा लिया। वहाँ इन्होंने अपनी निष्ठा और युद्धनिपुणता से सेना के अधिकारियों की दृष्टि में विशेष स्थान प्राप्त किया।

1965 तमे ..... प्राप्तवान्।

अनुवाद—1965 ई० में पाकिस्तान देश ने हमारे देश पर आक्रमण किया। तब अब्दुल हमीद को लाहौर के युद्धक्षेत्र में 'कसूर' नामक स्थान पर युद्ध में लगाया गया। पाकिस्तान देश के प्रति अमेरिका देश का पक्षपात सर्वविदित है। इसलिए उस समय भी अमेरिका ने पाकिस्तान को अभेद्य दूर तक मार करने वाले पैटन टैंक सहायता के लिए दे दिए। उस युद्ध में भारतीय सैनिकों ने शत्रु सैनिकों के अभेद्य अस्त्रों का पूरे उत्साह के साथ प्रतिरोध किया। उन सैनिकों में अब्दुल हमीद ने अपने प्राणों का भय छोड़कर फुटबॉल की तरह अद्‌भुत युद्ध-कौशल प्रदर्शित किया। युद्ध में पाकिस्तानी सैनिकों के फेंके गए गोले यद्यपि अभेद्य। और बहुत शक्ति-संपन्न थे किंतु अब्दुल हमीद ने उन्हें गेंद के समान मानकर जीप पर चढ़कर अपने देश की रक्षा के लिए अद्‌भुत कौशल प्रदर्शित किया। अचानक टैंकों ने सौ हाथ दूर से अब्दुल हमीद के ऊपर बहुत ही भयंकर गोलों को फेंकना शुरू कर दिया फिर भी उन्होंने धैर्य धारण करके वहाँ हथगोले फेंककर शत्रु सैनिकों के टैंक को नष्ट किया। धन्य है वह शूरवीर जिसने अपने रणकौशल से सामान्य साधना होने पर भी साधनसंपन्न पाकिस्तानी सेना रोक दी। किंतु हाय! पाकिस्तानी सैनिकों के तीसरे टैंक द्वारा फेंके गए एक गोले से अब्दुल हमीद वीरगति को प्राप्त हो गए।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) भारत वसुन्धरा शूरवीराणां जननी अस्ति, अतएव एषा प्रसिद्धा अस्ति।

(ख) अब्दुल हमीदः उत्तर प्रदेशस्य गाजीपुर जनपदे 'धामपुर' इति ग्रामे 1933 तमे वर्षे जन्म अलभत्।

(ग) बाल्यकालादेव हमीदस्य अभिरुचिः मल्लविद्यायां, यष्टिकाचालने लक्ष्यभेदे च इत्येतासु क्रीडासु आसीत्।

(घ) सः सेनायाः अधिकारिणां दृष्टौ स्वनिष्ठया युद्ध निपुणतया च विशेषं स्थानमलभत्।

(ङ) भारतपाकिस्तानयुद्धे अब्दुल हमीदः स्वप्राणानां भयं त्यक्त्वा कन्दुक क्रीडनम् इव अद्‌भुतं युद्धकौशलं प्रदर्शितवान्।

(च) सः पाकिस्तानसैनिकानां तृतीयेन टैङ्केन प्रक्षिप्तेन एकेन गोलकेन वीरगतिं प्राप्तवान्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) प्राचीनकालादेव भारतभूमौ असंख्याः **वीराः** जन्म अलभन्।

(ख) अस्माकं देशे अब्दुल हमीदस्य नाम **बहुश्रद्धया** स्मर्यते।

(ग) अब्दुल हमीदस्य जन्म **1933 तमे ई० वर्षे उत्तर प्रदेशस्य गाजीपुर जनपदे 'धामपुर' इति** ग्रामे अभवत्।

(घ) पाकिस्तानदेशं प्रति **अमेरिका देशस्य** पक्षपात: सर्वविदित: अस्ति।

(ङ) तृतीयेन टैङ्केन प्रक्षिप्तेन **एकेन गोलकेन अब्दुल हमीद:** वीरगतिं प्राप्तवान्।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) अब्दुल हमीदस्य जन्म गाजीपुर जनपदे अभवत्।

(ख) अब्दुल हमीदस्य बाल्यादेव क्रीडासु विशिष्टा रुचि: आसीत्।

(ग) अब्दुल हमीदेन शत्रुसेनाया: अनेका: टैङ्का: नाशिता:।

(घ) तेन स्वप्राणानां त्यागं कृत्वा देशस्य गौरवस्य रक्षा कृता।

(ङ) अब्दुल हमीदस्य देशभक्ति: अस्माकं कृते अनुकरणीया अस्ति।

4. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

(क) शूरवीर: = भारतभूमौ अब्दुल हमीद नाम्न: एक: **शूरवीर:** अभवत्।

(ख) परमकुशल: = अभिमन्यु: धनुर्विद्यायां **परमकुशल:** अस्ति।

(ग) अभेद्य: = अमेरिकादेशेन पाकिस्तान देशाय **अभेद्य:** टैङ्क: प्रदत्त:।

(घ) आरूढ: = अश्वे **आरूढ:** महाराण प्रताप: शत्रुसैनिकान् कदलीवृक्षा: इव अकर्त्तयत्।

(ङ) वीरगति: = कौशलपूर्वकं युद्धं कुर्वन् हमीद: देशरक्षायै **वीरगतिं** प्राप्तवान्।

5. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय निर्देश कीजिए—

प्राप्तवान्	=	**क्तवतु**
प्रदत्त:	=	**क्त**
लिखित:	=	**क्त**
कृत:	=	**क्त**
पठितवान्	=	**क्तवतु**

6. प्रथम अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए—

भारतवसुन्धरा ..... परमकुशल: अभवत्।

अनुवाद—सारे संसार में प्रसिद्ध है कि भारतभूमि शूरवीरों की जननी है। प्राचीन काल से आज तक असंख्य वीरों ने भारतभूमि पर जन्म लिया। उनमें अब्दुल हमीद का नाम बहुत श्रद्धा से याद किया जाता है। इस वीर श्रेष्ठ का जन्म 1933 ई० में उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में 'धामपुर' नामक गाँव में हुआ था। इनकी पारिवारिक स्थिति बहुत सामान्य थी। बचपन से ही अब्दुल हमीद की रुचि कुश्ती, लाठी चलाने और लक्ष्यभेद करने में थी। इसलिए सतत् अभ्यास से इन खेलों में ये बहुत कुशल हो गए।

7. निम्नलिखित को याद कीजिए—

उत्तर—(स्वयं कीजिए)।

सप्तदशः पाठः

मूर्खमण्डलम्

हिंदी अनुवाद

कृष्णपुरस्य ..... दास्यति।'

अनुवाद—कृष्णपुर के पास एक वन में एक सेमल का पेड़ था। वहाँ सिन्धुक नाम का कोई पक्षी रहता था। उसकी बीट में स्वर्ण (सोना) उत्पन्न होता था अर्थात् उसकी बीट सोना में बदल जाती थी। एक बार कोई शिकारी उस जंगल में आता है। उसके सामने ही वह बीट करता है। भूमि पर गिरते ही वह बीट सोना हो गई। उसको देखकर शिकारी आश्चर्यचकित होता है। वह जाल फैलाकर उस पक्षी को पकड़ता है और पिंजरे में रखता है। फिर उसे घर लाकर वह विचार करता है—"इसे राजा को देता हूँ तो संतुष्ट होकर राजा मुझे बहुत सारा धन देगा।'

एवं विचार्य ..... मूर्खमण्डलम्॥

अनुवाद—ऐसा विचार करके राजमहल जाकर निवेदन करता है—"राजन्! पक्षी सोने की बीट करता है। आप इसे ग्रहण करें।" उसे पाकर राजा खुश होता है। मंत्री को बुलाकर कहता है—"हे मंत्री! इस विलक्षण पक्षी को ग्रहण करो।" तब मंत्री बोला—"राजन्! यह शिकारी मूर्ख है। किसी ने भी कभी भी कोई भी पक्षी सोने की बीट करता हुआ न देखा है और न ही सुना है। यह शिकारी तो धनलोभ के कारण झूठ बोल रहा है। इसे पिंजड़े से मुक्त करके छुड़वा दीजिए।" मंत्री की बात सुनकर राजा उस पक्षी को छोड़ देता है। तब वह पक्षी जल्दी से उड़कर द्वार के ऊपर बैठ गया। सभी के सामने वह सोने की बीट करता है और इसके बाद

पश्चात्ताप करते हुए वे जब तक उसको पकड़ने का प्रयत्न करते हैं तब तक वह उड़कर चला गया और उसने यह श्लोक बोला—

पहले तो मैं मूर्ख हूँ दूसरा शिकारी। इसके बाद राजा और मंत्री, यहाँ तो सभी मूर्खों का समूह है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) सिन्धुकः नाम्नः पक्षी एकस्मिन् वने शाल्मलिः वृक्षे वसति स्म।

(ख) पक्षिणः स्वर्णपुरीषं दृष्ट्वा व्याधः आश्चर्यचकितः अभवत्।

(ग) आखेटकः तं पक्षीं ग्रहीतुं जालं प्रसारयति।

(घ) प्रथमः मूर्खः स्वयं पक्षी अस्ति।

(ङ) सर्वे: मूर्खाणां मण्डलम् अस्ति।

2. रिक्त स्थान भरिए—

(क) तस्य पुरीषे **स्वर्णम्** उत्पद्यते स्म।

(ख) एकदा कश्चिद् **व्याधः** तस्मिन् वने आगच्छति।

(ग) व्याधः **तं पक्षीं ग्रहीतुं जालं** प्रसारयति।

(घ) एनं **राज्ञे** निवेदयामि चेत् संतुष्टो राजा प्रभुतं **धनं** मह्यं दास्यति।

(ङ) भो मन्त्रिन्! विलक्षणोऽयं **पक्षीं** गृहीतव्यः।

(च) द्वितीयः मूर्खः **पाशबन्धकः**।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) सिन्धुक नाम्नः पक्षी स्वर्णपुरीषं करोति स्म।

(ख) व्याधेन जालं प्रसार्य पक्षी गृहीतः।

(ग) आखेटकः तं पक्षीं राज्ञः पार्श्वे अनयत्।

(घ) मन्त्रिणा सः पक्षी अविमोचयत्।

(ङ) पक्षिणा उक्तं यत् अत्र तु सर्वे मूर्खाः सन्ति।

4. परस्पर मेल कीजिए—

वर्तमान कालः	**भूतकालः**
गच्छति	**अगच्छत्**
गच्छतः	**अगच्छतम्**
गच्छन्ति	**अगच्छन्**
गच्छसि	**अगच्छः**
गच्छथः	**अगच्छतम्**
गच्छामि	**अगच्छम्**
गच्छावः	**अगच्छाव**
गच्छामः	**अगच्छाम**

5. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) स्वर्णम् = **सोना।**
पक्षिणः पुरीषे **स्वर्णम्** उत्पद्यते स्म।

(ख) पुरतः = **सामने।**
चौरः राज्ञः **पुरतः** एव पलायितः।

(ग) प्रसार्य = **फैलाकर।**
सा स्त्री स्वपुत्रस्य रक्षायै हस्तौ **प्रसार्य** जनान् आह्वयति।

(घ) प्रासादे = **महल में।**
पक्षिणा उक्तं यत् अस्मिन् **प्रासादे** तु सर्वे मूर्खाः प्रतीयन्ते।

(ङ) पाशबन्धकः = **शिकारी।**
एषः **पाशबन्धकः** तु महामूर्खः अस्ति।

अष्टादशः पाठः

ध्रुवः

हिंदी अनुवाद

पुरा ..... पूरयिष्यति।''

अनुवाद—प्राचीन काल में उत्तानपाद नाम के एक राजा थे। उनकी दो पत्नियाँ थीं—सुनीति और सुरुचि। सुनीति बड़ी और सुरुचि छोटी थी। छोटी पत्नी सुरुचि राजा को बहुत प्यारी थी। सुरुचि का पुत्र उत्तम पिता का बहुत प्यारा था। किंतु सुनीति का पुत्र ध्रुव उस उत्तानपाद का वैसा स्नेह का पात्र नहीं था।

एक बार राजा उत्तानपाद सिंहासन पर बैठे थे। उनकी गोद में उत्तम बैठा था। उसे देखकर ध्रुव ने भी गोद में चढ़ना चाहा। तब सुरुचि ने ईर्ष्या और घमंड से डाँटते हुए कहा—''वत्स! तुम्हारा मनोरथ बेकार ही है। सौत के गर्भ से उत्पन्न तुम मेरे पुत्र के बराबर कैसे होना चाहते हो? इस राजसिंहासन के योग्य मेरा पुत्र उत्तम ही है।''

इस अपमान से आहत बालक ध्रुव ने माँ के पास जाकर अपने दुःख को बताया। इसके बाद सुनीति बोली—''पुत्र! दुःख मत करो। भगवान की शरण में जाओ। वे ही अपनी कृपा से तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करेंगे।''

मातुः आज्ञया ..... नास्ति।

अनुवाद—माता की आज्ञा से ध्रुव मधु नामक महावन में गया। सप्त ऋषियों के परामर्श से उसने वहाँ घोर तपस्या की। तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उस बालक को दर्शन दिए। भगवान की कृपा से ध्रुव ने श्रेष्ठ से श्रेष्ठ पद प्राप्त

किया। पिता का महल और राजपद प्राप्त किया। और मरने के बाद वह आकाश में उत्तर दिशा में सप्तर्षि मंडल के पास में ध्रुवतारा के रूप में स्थिर हो गया। और उसकी माता बहुत ही निर्मल तारा होकर नक्षत्र मंडल सदा के लिए स्थित है।
बालक ध्रुव ने भी दृढ़ संकल्प से सर्वोच्च पद को प्राप्त किया। सच है, दृढ़ इच्छाशक्ति निष्फल नहीं जाती है। मनोकामनाओं का मार्ग दृढ़ संकल्प के सामने निष्फल नहीं है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) राजा उत्तानपादस्य पत्न्योः नाम्नि स्तः — सुनीतिः सुरुचिश्च।
(ख) ध्रुवस्य पितुः नाम अस्ति उत्तानपादः।
(ग) ध्रुवः स्वपितुः उत्तानपादस्य अङ्के आरोढुम् ऐच्छत्।
(घ) उत्तमः सुरुचेः पुत्रः आसीत्।
(ङ) ध्रुवः तपः कर्तुं मधुनामकं महावनम् अगच्छत्।
(च) ध्रुवा इच्छाशक्तिः निष्फला न जायते।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) उत्तानपादस्य द्वे **पत्न्यौ** आस्ताम्।
(ख) ध्रुवः **सुनीतेः** पुत्रः आसीत्।
(ग) तस्य अङ्के **उत्तमः** आसीनः आसीत्।
(घ) ध्रुवोऽपि पितुः **अङ्के** आरोढुम् **ऐच्छत्**।
(ङ) **भगवतः** शरणं गच्छ।

3. हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) प्राचीनकाल में उत्तानपाद नाम के एक राजा थे।
(ख) उनकी दो पत्नियाँ थीं।
(ग) छोटी रानी सुरुचि राजा को बहुत प्रिय थी।
(घ) पुत्र! तुम्हारा मनोरथ व्यर्थ ही है।
(ङ) वे ही अपनी कृपा से तुम्हारे मनोरथ को पूर्ण करेंगे।

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) ध्रुवः राज्ञः उत्तानपादस्य पुत्रः आसीत्।
(ख) तेन महत्तपः कृतः।
(ग) भगवतः कृपया ध्रुवेण उत्तमः पदः प्राप्तः।
(घ) ईश्वरः तस्मै दर्शनम् अददात्।
(ङ) ध्रुवा इच्छाशक्तिः व्यर्था न जायते।
(च) अस्माभिः परिश्रमी भवितव्यः।
(छ) यत्र मनोरथः अस्ति तत्र निष्फला नास्ति।

5. निम्नलिखित संधि कीजिए—

तस्य + एव = **तस्यैव**
महत् + तपः = **महत्तपः**
निः + फला = **निष्फला**
सिंहः + आसनम् = **सिंहासनम्**

6. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य-रचना कीजिए—

(क) पत्नी = राज्ञः उत्तानपादस्य कनिष्ठा **पत्नी** ईर्ष्यालु प्रवृत्त्या आसीत्।
(ख) समीपे = ध्रुवः स्वपितुः **समीपे** अगच्छत् तस्य अङ्के च उपवेशितुम् ऐच्दत्।
(ग) मातुः = ध्रुवः **मातुः** आज्ञया तपः कर्तुं मधुनामके महावने अगच्छत्।
(घ) प्रियतरः = उत्तमः राज्ञः **प्रियतरः** पुत्रः आसीत्।
(ङ) ध्रुवसङ्कल्पः = **ध्रुवसङ्कल्पः** कदापि निष्फलः न भवति।

एकोनविंशतिः पाठः

जरासन्धः

हिंदी अनुवाद

जरासन्धः ..... संज्ञा अभवत्।

अनुवाद—जरासंध राजा बृहद्रथ का पुत्र था। समय बीतने के साथ जब राजा बृहद्रथ के कोई संतान नहीं हुई। तब वह बहुत चिंतित हुए। एक बार एक सिद्ध पुरुष उनके महल में उपस्थित हुए। तब उन सिद्ध पुरुष ने राजा बृहद्रथ के लिए एक उपाय किया। सिद्ध पुरुष ने राजा को एक आम दिया। उस फल को लेकर राजा ने अपनी दोनों पत्नियों को आधा-आधा भाग करके खाने के लिए दिया। कालांतर में उन दोनों से आधे-आधे शरीर के रूप में एक-एक पुत्र हुए। उन शरीर के पिंडों को जरा नाम की निशाचरी (राक्षसी) ने एकाकार अर्थात् एक कर दिया। इसलिए उनके पुत्र का नाम 'जरासंध' हो गया।

महाभारतकाले ..... प्राप्तवान्।

अनुवाद—महाभारत काल में जब कौरव-पांडवों के बीच युद्ध हुआ तब इस वीर ने दुर्योधन के पक्ष में युद्ध किया। जरासंध के साथ भीम का मल्लयुद्ध (कुश्ती) हुआ। उस युद्ध में भीम को हतोत्साहित देखकर श्रीकृष्ण ने कूटनीति के अनुसार भीम के प्रति संकेत किया। संकेत के द्वारा श्रीकृष्ण ने एक घास लेकर उसे बीच से विभाजित किया। इशारे मात्र

से भीम ने भी जरासंध के पैर के ऊपर अपना पैर रखकर और दूसरे हाथ में पकड़कर उसके शरीर को दो भागों में बाँट दिया। शरीर बँट जाने से जरासंध वीरगति को प्राप्त हो गया।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) राजा बृहद्रथस्य पुत्रस्य नाम जरासन्ध: आसीत्।

(ख) राजा बृहद्रथस्य राजप्रासादे एक: सिद्ध: पुरुष: उपस्थित: अभवत्।

(ग) आम्! वपुपिण्डौ जरा नामाख्या निशाचर्या एकाकार: कृतवती।

(घ) महाभारते कौरव-पाण्डवयोर्मध्यें युद्धम् अभवत्।

(ङ) जरासन्धेन सह भीमस्य मल्लयुद्धम् अभवत्।

(च) भीम: जरासन्धस्य वपुं भागद्वये अविभाजयत् येन स: वीरगतिं प्राप्तवान्।

2. उचित पद से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) जरासन्धस्य पितु: नाम **बृहद्रथ:** आसीत्।

(ख) सिद्धपुरुष: **राजप्रासादे** उपस्थित: अभवत्।

(ग) **जरासन्धेन** सह भीमस्य युद्धम् अभवत्।

(घ) भीम: जरासन्धयोर्मध्ये **भीम:** हतोत्साहित: अभवत्।

(ङ) **तृणं** गृहीत्वा कृष्ण: तत् विभाजनं कृत:।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) जरासन्ध: युद्धकलायां निपुण: आसीत्।

(ख) सिद्धपुरुषेण राज्ञे फलम् अददात्।

(ग) महाभारते कौरव-पाण्डवयोर्मध्ये युद्ध: अभवत्।

(घ) कृष्णेन कूटनीतिना: भीमं प्रति संकेतं कृतवान्।

(ङ) भीम: जरासन्धस्य पादोपरि पादं स्थापयित्वा तम् अचीरयत्।

(च) जरासन्ध: वीरगतिं प्राप्तवान्।

4. हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) समय बीतने पर राजा बृहद्रथ के जब कोई संतान नहीं हुई तब वह चिंतित हुए।

(ख) उन शरीर के टुकड़ों को जरा नाम की निशाचरी ने मिलाकर एक कर दिया।

(ग) तब जरासंध नाम के इस वीर ने कौरव पक्ष अथवा दुर्योधन के पक्ष में युद्ध किया।

(घ) उस मल्लयुद्ध में भीम को हतोत्साहित देखकर श्रीकृष्ण ने कूटनीति के अनुसार भीम को संकेत किया।

(ङ) श्रीकृष्ण के संकेत के अनुसार भीम ने जरासंध के पैर के ऊपर पैर रखकर और दूसरे हाथ से पकड़कर शरीर को दो भागों में बाँट दिया।

(च) शरीर के बँट जाने से जरासंध वीरगति को प्राप्त हो गया।

5. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) कालान्तरे = **समय बीतने पर।**
कालान्तरे राज्ञ: बृहद्रथस्य पत्न्याभ्याम् अर्द्ध-अर्द्ध शरीरभागे द्वौ पुत्रौ अभवताम्।

(ख) प्रासादे = **महल में।**
एकदा राज्ञ: **प्रासादे** एक: सिद्धपुरुष: आगत:।

(ग) मल्लयुद्धम् = **कुश्ती।**
भीम-जरासन्धयोर्मध्ये **मल्लयुद्धम्** अभवत्।

(घ) विभाजित: = **बाँट दिया।**
भीमेन जरासन्धस्य शरीरं द्वयो: भागयो: **विभाजित:।**

(ङ) गृहीत्वा = **पकड़कर।**
भीमेन जरासन्धस्य पादं **गृहीत्वा** स: भूमौ पातित:।

6. निम्नलिखित शब्दों में मेल कीजिए—

अर्जुन:	**गाण्डीवम्**
भीम:	**मल्लयुद्धम्**
दुर्योधन:	**गदा**
नकुल-सहदेव:	**धनुर्बाण**
कृष्ण:	**वेणु:**
द्रोपदी	**वेणी**

7. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

कालान्तरे	=	**काल + अन्तरे**
राजप्रासाद:	=	**राज + प्रासाद:**
एकाकार:	=	**एक + आकार:**
हतोत्साहित:	=	**हत + उत्साहित:**
कूटनीत्यानुसारम्	=	**कूटनीत्या: + अनुसारम्**
पादोपरि	=	**पाद + उपरि**

हिंदी अनुवाद

शरीरमाद्यं ..... औषधं दीयते।

अनुवाद—शरीर पहला धर्म का साधन है, शास्त्र का यह वाक्य पूरी तरह से उचित है। स्वस्थ शरीर के बिना जीवन की यात्रा कैसे सिद्ध (सफल) हो सकती है। चिकित्साशास्त्र में चरक संहिता नाम का आयुर्वेद का ग्रंथ न केवल सबसे पुराना है अपितु सबसे श्रेष्ठ भी है। किस रोग का क्या लक्षण है, क्या हितकर है और क्या उपचार है? यह सब यहाँ चिकित्साचार्य चरक ने विस्तार से वर्णित किया है। महर्षि चरक कहते हैं—यह शरीर निश्चित रूप से पाँच भौतिक तत्वों से बना है। और इस शरीर की पाँच इंद्रियाँ हैं और इंद्रियों को वश में रखना स्वस्थ रहने का तरीका है।

और भी इस शरीर के तीन दोष हैं—वात (वायु), पित्त और कफ। इन तीनों दोषों के असमान होने पर शरीर में रोग उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार शरीर के दोषों का असंतुलित होना ही रोग है और इन दोषों का समान रहना उपचार है। इन दोषों की मात्राओं में संतुलन हो इसलिए रोगी को औषधि दी जाती है।

परं ..... स्वस्थाचरणम्।

अनुवाद—किंतु यदि आहार-आचार के विषय में व्यक्ति संयमी हो तो शरीर के दोष स्वयं ही समान मात्रा में रहते हैं। कब्ज होने पर भोजन करना विष के समान है—इसलिए व्यक्ति को हितकारी भोजन करने वाला, संतुलित मात्रा में खाने वाला और ऋतु के अनुकूल खाने वाला होना चाहिए। मन और शरीर एक-दूसरे पर आश्रित हैं। स्वास्थ्य की रक्षा के लिए न केवल शुद्ध आहार, स्वच्छ वायु, निर्मल जल, यथोचित व्यायाम आवश्यक है अपितु मन की शुद्धि भी बहुत आवश्यक है। इसलिए सदाचारी और संयमी होना स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) शरीरम्।
(ख) चरक संहिता।
(ग) पञ्च।
(घ) त्रयः।
(ङ) आहार-आचार विषये।
(च) रोगम्।
(छ) भोजनम्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) **पञ्चभूतात्मकः** हि देहः।
(ख) वातः, **पित्तः** कफः इति त्रयः **दोषाः** शरीरस्य।
(ग) अजीर्णे **भोजनं** विषम्।
(घ) अतः जनः **हितभुक्, मितभुक् ऋतुभुक्** च स्यात्।

3. रंगीन पदों के आधार पर प्रश्न निर्माण कीजिए—

(क) कं विना जीवनयात्रा न सिद्धं भवितुमर्हति?
(ख) औषधं कस्मै दीयते?
(ग) स्वस्थः भवितुं कस्य शुद्धिः अपि अपेक्षिता भवति?
(घ) शरीरे केषां प्रमाणे विषमे जाते रोगाः जायन्ते?
(ङ) रोगं किं कर्तुम् औषधं दीयते?

4. निम्नलिखित कथन शुद्ध हैं अथवा अशुद्ध लिखिए—

(क) चरकसंहिता आधुनिकतमः ग्रन्थः अस्ति। **अशुद्धः**
(ख) शरीरस्य पञ्च दोषाः भवन्ति। **अशुद्धः**
(ग) असंयमेन शरीरस्य दोषाणां समतोलनं भवति। **अशुद्धः**
(घ) स्वास्थ्य-रक्षायै दोषाणां समतोलनं भवति। **शुद्धः**
(ङ) इन्द्रिय-निग्रहः स्वस्थाचरणम्। **शुद्धः**

5. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

(क) शरीरम् = आद्यं धर्मसाधनं **शरीरम्** अस्ति।
(ख) उपपन्नम् = स्वस्थशरीरं बिना जनः किमपि सिद्धं न कर्तुं शक्नोति इति शास्त्र वाक्यं सर्वथा **उपपन्नम्**।
(ग) निदानम् = औषधेण रोगाणां **निदानं** भवति।
(घ) उपचारः = दोषाणां समतोलने रोगस्य **उपचारः** सम्भवम्।
(ङ) विषम् = अजीर्णे भोजनं **विषम्** अस्ति।
(च) सदाचारः = स्वास्थ्याय **सदाचारः** अत्यावश्यकः अस्ति।

6. निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए—

आद्यम्	=	**पहला**
प्राचीनतमः	=	**सबसे पुराना**
उपचारः	=	**इलाज**
रुग्णाय	=	**रोगी के लिए**

हिंदी अनुवाद

अस्मिन् ..... ऋतवः भवन्ति।

अनुवाद—इस ब्रह्मांड में बहुत सारे ग्रह-नक्षत्र हैं। आकाश में दिखाई देने वाले मंगल, बुध, गुरु, शनि आदि ग्रह-नक्षत्रों में सूर्य भी एक नक्षत्र (तारा) है। इसके प्रकाश से ही पृथ्वी, चंद्रादि प्रकाशित होते हैं। यह नक्षत्र ऊर्जा का (शक्ति का) महास्रोत है। इसी से ही यह संसार गतिशील है। वैज्ञानिक इसकी ऊर्जा के प्रति विशेष रूप से उन्मुख (उद्यत) हैं। सूर्य संसार को प्रकाशित करने वाला है। यह न केवल अंधकार ही नष्ट करता है अपितु समय के नियमन से महीनों और ऋतुओं का जनक भी है। इसकी ऊष्मा की अधिकता से वसंत, ग्रीष्म, वर्षा और कमी से शरद्, हेमंत और शिशिर ऋतुएँ होती हैं।

आधुनिके ..... स्वीक्रियते।

अनुवाद—आधुनिक युग में मशीन आदि के संचालन के लिए और खाना बनाने के कार्य में सूर्य की ऊर्जा का उपयोग किया जाता है। गाँवों में जहाँ विद्युत के साधन कम हैं, वहाँ दिन में यंत्रों के माध्यम से एकत्रित की गई विद्युत ही प्रयोग की जाती है। अब खेती के कार्यों में भी इसका उपयोग किया जाता है। कुएँ के जल से खेतों की सिंचाई के लिए नए यंत्र सूर्य की शक्ति से संचालित होते हैं।

जीवन के स्वास्थ्य के लिए भी सूर्य की बहुत बड़ी भूमिका है। बहुत-सी योग-क्रियाएँ इसकी धूप में ही की जाती हैं। इसकी किरणों के प्रभाव से त्वचा के अनेक रोग नष्ट होते हैं। ऋषि अथर्व के अनुसार उगते सूर्य की किरणों द्वारा आधे सिर में होने वाली पीड़ा दूर की जा सकती है। इसलिए चिकित्सा के क्षेत्र में भी प्राकृतिक चिकित्सा के रूप में सूर्य हमारा उपकार करने वाला है। शारीरिक शास्त्र में सूर्य की किरणों का सेवन पोषण के रूप में स्वीकार किया जाता है।

एवमेव ..... उपासन्ते।

अनुवाद—ऐसे ही पर्यावरण के रक्षण में भी सूर्य का योगदान अविस्मरणीय है। क्योंकि इसकी किरणें जल में ठंडक और पवित्रता को लाती हैं। पौधों और वनस्पतियों का विकास भी सूर्य की ऊष्मा के बिना संभव नहीं है। इसकी किरणों के अभाव में यह वन-संपदा विनष्ट ही हो जाए। इसलिए पृथ्वी पर सभी का जीवन सूर्य पर ही आधारित है। इस प्रकार सूर्य हमें जीवन और ऊर्जा देकर बहुत बड़ा उपकार करता है। इन्हीं गुणों के कारण लोग इसको पूजते हैं।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) ब्रह्माण्डे ग्रहनक्षत्राणि सन्ति।

(ख) सूर्यः ऊर्जायाः महास्रोतः अस्ति।

(ग) आधुनिके युगे यन्त्रादीनां संचालनाय पाककर्मणि च सूर्योर्जसः उपयोगः क्रियते।

(घ) सूर्यस्योष्मणः आधिक्येन वसन्त-ग्रीष्म-वर्षा इति ऋतवः भवन्ति।

(ङ) सूर्यस्योष्माणं विना पादपानां वनस्पतिनां च विकासः न भविष्यति।

(च) सूर्यः अस्मभ्यं जीवनम् ऊर्जा च दत्वा महदुपकरोति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) सूर्येनैव इदं **जगत्** गतिशीलमस्ति।

(ख) कृषिकर्मसु **अस्य** उपयोगः क्रियते।

(ग) कालस्य नियामकत्वात् सूर्यः **मासानां ऋतूनां च** जनकोप्यस्ति।

(घ) **कतिपयः** योगक्रियाः सूर्यस्यापतपे क्रियन्ते।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) अस्मिन् ब्रह्मण्डे बहूनि ग्रहनक्षत्राणि सन्ति।

(ख) सूर्यस्य प्रकाशेन पृथ्वी चन्द्रमा च प्रकाशेते।

(ग) आधुनिकं युगे सूर्यस्य शक्त्याः बहु उपयोगः क्रियते।

(घ) स्वस्थे जीवने अपि सूर्यस्य महती भूमिका अस्ति।

(ङ) सूर्यः अस्मभ्यं जीवनम् ऊर्जा च दत्वा महदुपकरोति।

4. हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) इसके प्रकाश से ही पृथ्वीचंद्रादि प्रकाशित होते हैं।

(ख) सूर्य ऊर्जा का महास्रोत है।

(ग) बहुत-सी योगाक्रियाएँ इसकी धूप में ही की जाती हैं।

(घ) इसकी किरणों के प्रभाव से ही त्वचा के अनेक रोग नष्ट होते हैं।

(ङ) जीवों के स्वास्थ्य के लिए सूर्य की बहुत बड़ी भूमिका है।

5. रंगीन शब्दों के आधार प्रश्नों का निर्माण कीजिए—

(क) क्षेत्राणां सेचनार्थं नूतनानि यन्त्राणि कथं संचालितानि भवन्ति?

(ख) कस्य प्रकाशेनैव पृथ्वीचन्द्रादयश्च प्रकाशन्ते?
(ग) सूर्योष्माणं विना केषां विकास: न सम्भवति?
(घ) जीवानां कस्यार्थं सूर्यस्य महती भूमिका अस्ति?
(ङ) सूर्यस्य रश्मीनामभावे का विनष्टा भविष्यति?

6. निम्नलिखित शब्दों में संधि अथवा संधि-विच्छेद कीजिए—

चन्द्रोदय:	=	**चन्द्र + आदय:**
भूमिकास्ति	=	**भूमिका + अस्ति**
अनेन + एव	=	**अनेनैव +**
अस्योपयोगम्	=	**अस्य + उपयोगम्**
अस्य + ऊर्जस:	=	**अस्योर्जस:**
सूर्य + आधारितम्	=	**सूर्याधारितम्**

7. निम्नलिखित शब्दों से संस्कृत में वाक्य-रचना कीजिए—

(क) बहूनि = अस्मिन् ब्रह्माण्डे **बहूनि** ग्रहण क्षत्राणि सन्ति।
(ख) ऊर्जस: = सूर्य: **ऊर्जस:** महास्रोत: अस्ति।
(ग) रश्मीनाम् = सूर्यस्य **रश्मीनां** प्रभावेण जले शैत्यं पावनत्वञ्च भवति।
(घ) प्रकाशक: = सूर्य: संसारस्य **प्रकाशक:** अस्ति।
(ङ) त्वचाया: = सूर्यस्य रश्मीनां प्रभावेण **त्वचाया:** अनेका: रोगा: नश्यन्ति।

8. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए—

प्रकाशन्ते	=	**प्रकाशित होते हैं**
ऊर्जस:	=	**ऊर्जा का**
सेचनार्थम्	=	**सींचने के लिए**
त्वचाया:	=	**त्वचा के**
संपोषिका	=	**पोषण करने वाली**
उपासन्ते	=	**पूजा करते हैं**

द्वाविंशतिः पाठः

सूक्तयः

हिंदी अनुवाद

आचार: ..... भुज्यते।

- आचरण सबसे बड़ा धर्म है।
- श्रद्धालु ज्ञान प्राप्त करता है।
- विद्वान सब जगह आदर पाता है।
- लालच पाप का कारण है।
- अच्छाई-बुराई संगति से पैदा होती है।
- समय को बर्बाद करने पर विद्या कहाँ?
- विवेकहीनता घोर आपदाओं की जननी है।
- त्रुटियों से मुसीबतें बढ़ जाती हैं।
- थोड़ी (अधकचरी) विद्या भयानक है।
- जैसा किया जाता है वैसा भोगा जाता है।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) अविवेक: परमापदां पदम् अस्ति।
(ख) श्रद्धावान् ज्ञानं लभते।
(ग) विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।
(घ) लोभ: पापस्य कारणम् अस्ति।
(ङ) छिद्रेषु अनर्था: बहुली भवन्ति।

2. आशय लिखिए—

(क) य: विद्याया: अल्पम् अधययनं करोति तस्यर्थम् अथक अन्येषां कृते सा दु:खदायी भवितुमर्हति। स: अर्थस्य अनर्थं कर्तुं शक्नोति तस्य बुद्धया: सम्पूर्ण: विकास: न भवति येन स: किमपि कार्यं सम्यक्तया पूर्णं न कर्तुं शक्यते। अत: याऽपि विद्या पठेम तस्याम् अस्माकं पूर्णं ज्ञानं भवेत्।
(ख) य: एकम् एकं क्षणं आमोदेन-प्रमोदेन यापयति स: कदापि विद्यालाभं न प्राप्तुं शक्यते यतोहि विद्यायै तु सुखानि त्यजनानि भवन्ति।
अत: एतादृशेभ्य: छात्रेभ्य: कदापि विद्या न लभते येन सम्पूर्णे जीवने इतस्तत: भ्रमन् एव स्वकालं यापयन्ति।
(ग) य: जन: लोभ: करोति स: अनुचितकार्यं करणे सदा अग्रे तिष्ठति। तस्य विवेक: कुण्ठित: भवति। एवं स: पापगर्ते पतति। अत: कदापि लोभ: न कर्त्तव्य:।
(घ) अविवेकी जन: प्राय: आपदासु तिष्ठति यतोहि स: न जानाति यत् कतमं कार्यं सम्यक् अस्ति कतमं च अहितकरम्। कास्मन् लाभ: प्राप्तुं शक्यते कस्मिन् हानि: भविष्यति। अत: सर्वेऽपि पुरुषा: विवेकशीला: भवेयु:।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) विदुष: सर्वत्र पूजा भवति।
(ख) अल्पा विद्या भयङ्करी अस्ति।
(ग) सन्तोष: एव परमं धनमस्ति।

(घ) अस्माकम् आचरणं भवेत्।
(ङ) श्रद्धावान् एव ज्ञानं लभते।
(च) समय: अनमोल: अस्ति।

4. हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) आचरण सबसे बड़ा धर्म है।
(ख) दोष और गुण संगति से पैदा होते हैं।
(ग) श्रद्धालु ज्ञान प्राप्त करता है।
(घ) त्रुटियों से मुसीबतें बढ़ती हैं।

5. दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) कारणम् = **कारण।**
लोभ: पापस्य **कारणम्** अस्ति।
(ख) कुत: = **कहाँ से।**
सुखार्थिन: **कुतो** विद्या?
(ग) भुज्यते = **भोगा जाता है।**
यथा क्रियते तथा **भुज्यते** एतत् शास्त्राणां वाक्यम्।
(घ) सर्वत्र = **सब जगह।**
य: विद्वान् भवति तस्य **सर्वत्र** आदरं भवति।
(ङ) लभते = **प्राप्त होता है।**
य: परिश्रमेण कार्यं करोति तस्मै एव सफलता **लभते**।

6. निम्नलिखित शब्दों की विभक्तियाँ लिखिए—

पापस्य = **षष्ठी** श्रद्धावान् = **प्रथमा**
सुखानि = **प्रथमा** छिद्रेषु = **सप्तमी**

7. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) संसर्गजा = जने दोषगुणा: **संसर्गजा** एव जायन्ते।
(ख) पदम् = य: विवेकहीन: भवति स: सर्वदा आपदानां **पदम्** प्राप्नोति।
(ग) छिद्रेषु = अनर्था: **छिद्रेषु** एव भवन्ति।
(घ) श्रद्धावान् = य: **श्रद्धावान्** भवति स: ज्ञानं लभते।
(ङ) सर्वत्र = **सर्वत्र** विद्वान् समाद्रियते मूर्ख: न।

8. शब्दों का सही मिलान कीजिए—

विद्वान्	**सर्वत्र पूज्यते**
आचार:	**परमो धर्म:**
यथा क्रियते	**तथा भुज्यते**
अल्पविद्या	**भयङ्करी**
क्षणत्यागे	**कुतो विद्या**

त्रयोविंशतिः पाठः

राजकुमारः भोजः

(प्रथमः भागः)

हिंदी अनुवाद

आदौ ..... मुमोच।

अनुवाद—पुराने समय में धारा राज्य में सिन्धुल नाम के राज्य ने बहुत समय तक अपनी प्रजा का सब तरह से पालन किया। वृद्ध होने पर उनके यहाँ भोज नाम का पुत्र पैदा हुआ। जब वह पाँच साल का था तब उसके पिता ने अपने आपको बीमार जानकर मुख्य अमात्य (प्रधानमंत्री) को बुलाया और अपने छोटे भाई मुञ्ज को बलवान देखकर और पुत्र को बालक देखकर सोचा—'यदि मैं इस राजलक्ष्मी को धारण करने में समर्थ अपने सगे भाई को छोड़कर राज्य पुत्र को देता हूँ तो लोकनिंदा होगी और यदि मुञ्ज मेरे पुत्र को राज्य पाने के लालच में विष आदि देकर मार देगा तब वो दिया हुआ राज्य भी बेकार और पुत्र के न होने से वंश समाप्त। सच कहा है—''लोभ पाप को आश्रय देने वाला है और द्वेष, क्रोध आदि का जनक है। लोभ पाप का कारण है।''

ऐसा सोचकर मुञ्ज को राज्य देकर उसकी गोद में अपने पुत्र भोज को छोड़ दिया।

ततः ..... विद्या।''

अनुवाद—इसके बाद राजा के मर जाने पर राजसंपत्ति को पाकर मुञ्ज ने बुद्धिसागर नाम के व्यक्ति को मुख्य अमात्य नियुक्त किया।

व्यापार के बहाने दूर भेजकर उसके पद पर दूसरे को नियुक्त किया। इसके बाद गुरुओं से राजा मिंधुल के पुत्र को पढ़वाने लगा। इसके कुछ समय बाद सभा में ज्योतिष् शास्त्र में पारंगत, सभी विद्याओं में निपुण एक ब्राह्मण आकर राजा को आशीर्वाद देकर बैठ गया। और उसने कहा—''देव! यह संसार मुझे सब कुछ जानने वाला कहता है। इसलिए कुछ भी पूछो।'' इसके बाद राजा भी ब्राह्मण की गर्वयुक्त मुद्रा से चमत्कृत हुआ। उसकी बात सुनकर हमारे जन्म से लेकर इस क्षण तक जो-जो मेरे द्वारा आचरण किया गया वह सब कुछ आप बोले, आप सर्वज्ञ ही हैं, ऐसा कहा। तब ब्राह्मण ने भी राजा ने जो-जो किया था वह सब बताया, छिपकर किए गए

कार्य भी बताए। तब राजा भी सभी कुछ सही जानकर संतुष्ट हुआ। और फिर वह बोला—

''जो माता के समान रक्षा करती है, पिता के समान हित में लगाती है, और पत्नी के समान दु:खों को दूर करती हुई रमण करती है ओर यश को दिशाओं में फैलाती है और लक्ष्मी (धन) को बढ़ाती है। ऐसी विद्या कल्पना के समान क्या-क्या कार्य नहीं साधती है अर्थात् विद्या सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाली है।''

तत: ..... अभूत्।

अनुवाद—इसके बाद सभा में बैठे बुद्धि सागर ने राजा से कहा—''देव! भोज की जन्मपत्री के विषय में ब्राह्मण को पूछो।'' तब मुञ्ज बोला—''भोज की जन्मपत्री बनाओ।'' तब वह ब्राह्मण बोला—''विद्यालय से भोज को लाओ।'' तब उत्सुक मुञ्ज ने भी अध्ययनशाला को शोभित करने वाले भोज को सैनिकों द्वारा बुलवाया। इसके बाद साक्षात् पिता के समान राजा को प्रणाम करके विनम्रपूर्वक उपस्थित हुआ। तब उसके रूप पर मोहित होने वाले, राजकुमारों के समूह में अच्छे भाग्य वाले, पृथ्वी पर आए महेंद्र के समान शरीर सहित अच्छे भाग्य के समान, सौभाग्य की मूर्ति के समान भोज को देखकर वह ब्राह्मण बोला—''राजन्! भोज के भाग्योदय को बताने में तो ब्रह्मा भी असमर्थ हैं, फिर मैं किसी तरह पेट भरने वाला ब्राह्मण कैसे बता सकता हूँ। फिर भी कुछ अपनी बुद्धि के अनुसार बोलता हूँ। यहाँ से भोज को अध्ययनशाला में भेज दो।'' तब राजा की आज्ञा से भोज के अध्ययनशाला में जाने पर ब्राह्मण बोला—''यह भोजराज पचपन वर्ष सात महीने तीन दिन तक इस दक्षिणी पृथिवी पर शासन करेगा।'' यह सुनकर राजा चतुरता से हँसते हुए सुंदर मुख वाला होते हुए भी तेजरहित मुख वाला हो गया।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) राजा सिन्धुलस्य वृद्धत्वे भोज: इति नाम्न: पुत्र अजायत्।

(ख) पुत्रम् अवलोक्य राजा विचारयामास यत् यदि एषा राज्यलक्ष्मी सोदरमपहाय पुत्राय यच्छामि तु लोकनिन्दा भविष्यति अपरञ्च मुञ्ज: लोभवशाद् विषादिन: मे बालं पुत्रं मारयिष्यति तु मम पुत्रस्तु मरिष्यति एव मे वंश नाशोऽपि भविष्यति।

(ग) लोभ: पापम् आश्रयते लोभादेव द्वेष क्रोधादय: उत्पन्ना: भवन्ति लोभ: पापस्य कारणमस्ति। अत: एतद् विचार्थ राजा राज्यं मुञ्जाय अयच्छत्।

(घ) मुञ्ज: भोजजन्मपत्रिका दत्वा तस्य भाग्यस्य विषये ब्राह्मणम् अपृच्छत्।

(ङ) ब्राह्मण: उक्तवान् यत् भोज: पञ्चाशत् पञ्चवर्षाणि सप्तमासदिनत्रयम् एनां पृथिवीं भोक्ष्यति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) आदौ धाराराज्ये **सिन्धुलनाम्नो** राजा चिरं प्रजां पर्यपालयत्।

(ख) तत: क्रमेण सभायां ज्योति: शास्त्रपारङ्गत: **सकलविद्या चातुर्यवान्** ब्राह्मण: समागम्य राज्ञे 'स्वस्ति' इति उक्त्वा उपविष्ट:।

(ग) ततो राजापि **सर्वाण्यप्यभिज्ञानानि** ज्ञात्वा तुतोष।

(घ) राजन् भोजस्य भाग्योदयं वक्तुं **विरिञ्चिरपि** नालं कोऽहमुदरंभरिब्राह्मण:।

(ङ) तत्तदाकर्ण्य राजा **चातुर्यादपहसन्** इव सुमुखेऽपि विच्छायवदानोऽभूत्।

3. निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों को शुद्ध कीजिए और वाक्य पुन: लिखिए—

(क) सीता रामस्य प्रिया आसीत्।

(ख) स: दुष्टं बाणेन अहनत्।

(ग) पशव: चतुर्भि: पादै: चलन्ति।

(घ) ब्रह्मचारिण: धनं किम्?

(ङ) सीता रामाय प्रिया आसीत्।

4. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य-रचना संस्कृत में कीजिए—

(क) जराम् = राजा आत्मनि **जरामवलोक्य** मुख्यामात्यम् आह्वयत्।

(ख) पापस्य = लोभ: **पापस्य** कारणमस्ति।

(ग) सर्वज्ञ: = स: उच्चकुलीन: विप्र: **सर्वज्ञ:** अस्ति।

(घ) विप्रस्य = भोज: **विप्रस्य** समक्षे प्रणम्य उपविष्ट:।

(ङ) जन्मपत्रिकाम् = मुञ्ज: विप्राय भोजस्य **जन्मपत्रिकां** यच्छति।

5. हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) उसके वृद्ध होने पर भोज नाम का पुत्र हुआ।

(ख) देव! यह संसार मुझे सर्वज्ञ कहता है।

(ग) देव! भोज को जन्मपत्री के विषय में ब्राह्मण को

पूछो।

(घ) इसके बाद साक्षात् पिता के समान राजा को प्रणाम करके विनम्रपूर्वक खड़ो हो गया।

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) मुञ्जाय राजा सिन्धुल: राज्यम् अददात्।

(ख) स: प्राह।

(ग) लोभ: पापस्य कारणमस्ति।

(घ) भोज: पञ्चपञ्चाशत् वर्षेभ्य: अधिकं राज्यं करिष्यति।

(ङ) विद्या पितरौ इव रक्षति।

(च) मुञ्ज: बुद्धिसागरं मन्त्रिणम् आह्वयत्।

7. स्तंभ 'अ' व स्तंभ 'ब' को जोड़कर सही वाक्य बनाइए—

	स्तंभ 'अ'	**स्तंभ 'ब'**
(क)	लोभ: प्रतिष्ठा पापश्च	**प्रसूतिर्लोभ: एव च।**
(ख)	द्वेषक्रोधादिजनको लोभ:	**पापस्य कारणम्।**
(ग)	मातेव रक्षति पितेव	**हिते नियुङ्क्ते।**
(घ)	कान्तेव	**चाभिरमत्यपनीय खेदम्।**
(ङ)	कीर्तिं च दिक्षु विमलां	**वितनोति लक्ष्मीम्।**

(च) किं किं न साधयति **कल्पतेव विद्या।**

8. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) क्त्वा प्रत्यय लगाकर—

खाद् = **खादित्वा**

लिख् = लिखित्वा।

स्था = **स्थित्वा**

पच् = पक्त्वा

बिभ् = भीत्वा

ज्ञा = ज्ञात्वा

(ख) ल्यप् प्रतयय लगाकर—

सं + हृ = संहृत्य

वि + ज्ञा = **विज्ञाय**

वि + स्मृ = विस्मृत्य

आ + दा = **आदाय**

उत् + स्था = उत्थाय

प्र + नम् = **प्रणम्य**

9. निम्नलिखित को याद कीजिए।

उत्तर— (स्वयं कीजिए।)

चतुर्विंशतिः पाठः

राजकुमारः भोजः

(द्वितीयः भागः)

हिंदी अनुवाद

(सिन्धुल नाम्नः ..... पठत।)

अनुवाद—(धाराराज्य में सिन्धुल नाम के राजा हुए थे। उनका भोज नाम का पाँच वर्ष का पुत्र था। मरणासन्न अवस्था में वे अपना राज्य अपने छोटे भाई मुञ्ज को अपने पुत्र सहित देकर मर गए। मुञ्ज के राजद्वार पर कोई ज्योतिष शास्त्र में पारंगत पंडित आया। उसने मुञ्ज के सामने रहस्य खोला (बताया) कि भोज पचपन वर्ष से अधिक राज्य करेगा। यह सुनकर राजा मुञ्ज तेजरहित मुख वाला हो गया। यह आपने पढ़ा अब आगे पढ़ो।)

ततो राजा ..... जगाम।

अनुवाद—तब राजा ने ब्राह्मण को भेजकर आधी रात में बिस्तर पर लेटे हुए अकेले सोचा—'यदि राजलक्ष्मी, भोजकुमार को जाएगी (मिलेगी) तब तो मैं जीता हुआ भी मर गया हूँ। और फिर मेरे इस कठिन परिश्रम का क्या लाभ? इस चिंता में डूबा राजा सो गया।' और इसके बाद सोचते हुए रात्रि के तीसरे पहर में एक मंत्रणा करके बंगाल के राजा महाबली वत्सराज को बुलाने के लिए उसने अपने अङ्गरक्षक को भेजा। अंगरक्षक वत्सराज के पास पहुँचकर बोला—''राजा मुञ्ज आपको बुला रहे हैं।'' वत्सराज को पाकर अथवा मिलकर मुञ्ज ने राजमहल को निर्जन मानकर वत्सराज को कहा—''हे वत्सराज! आप भुवनेश्वरी के वन में रात्रि के प्रथम पहर में भोज को मार देना। और उसके सिर को अंत:पुर में लाना।'' और वह उठकर राजा को नमन कर बोला—''आपकी आज्ञा सर्वोपरि है।'' इसके बाद अपने सेवकों को अपने घर की रक्षा के लिए भेजकर रथ को भुवनेश्वरी वन की ओर करके गुरु के पास से राजकुमार को लाने के लिए वत्सराज ने एक सेवक भेजा। कुछ मंत्रणा करके फिर पंडित को वत्सराज ने कहा—''ब्राह्मण! भोज कुमार को लाओ।'' इसके बाद इस वृत्तांत (समाचार) को जानकर भोज क्रोधित हुआ। तब वत्सराज बोला—''भोज! हम राजा की आज्ञा के दास हैं।'' बालक को रथ में बैठाकर तलवार को म्यान में रखकर शीघ्र महामाया भवन की ओर चला।

ततोपरान्ते .....विधेहि, इति।

अनुवाद—इसके उपरांत महामाया भवन पहुँचकर भोज को वत्सराज ने कहा—''कुमार! सेवकों के दैव से! किसी ज्योतिष् शास्त्र में प्रवीण, ब्राह्मण के द्वारा तुम्हारी राज्यप्राप्ति की भविष्यवाणी करने पर राजा ने आपकी हत्या का आदेश दे दिया।''

तब भोज ने बरगद के पेड़ के पत्ते को लेकर दोनो बनाकर जाँघ को चाकू से काटकर उस दोने में रक्त भरकर तिनके से एक पत्र में कोई श्लोक लिखकर वत्स को कहा—''महाभाग! यह पत्र राजा को देना। अब तुम भी राजा की आज्ञा का पालन करो।''

वैराग्यमापन्नो ..... अपतत्।

अनुवाद—इस प्रकार, वत्सराज को वैराग्य उत्पन्न हो गया और 'क्षमा करना' भोज को ऐसा कहकर प्रणाम करके उसे रथ में बैठाकर नगर से बाहर घने अंधकार में घर आकर तहखाने में रखकर उसकी रक्षा की। अपने आप ही कृत्रिम विद्या के द्वारा कुण्डलयुक्त तुरंत बोल जाने जैसे बंद नेत्रों वाले वाले भोज कुमार के मस्तक को लेकर राजभवन जाकर राजा को प्रणाम करके कहा—''श्रीमान! जैसा आदेश, दिया था वैसा कर दिया है।'' तब राजा ने पुत्र की हत्या को ज्ञानकर उसको कहा—''वत्सराज, तलवार के प्रहार के समय उस पुत्र ने क्या कहा?'' वत्सराज ने वह पत्र दे दिया। राजा अपनी पत्नी के हाथों से दीपक लाकर पत्र के उन अक्षरों को पढ़ता है—

मान्धता और बहुत-से महीपति इस युग को सजाकर पृथ्वी से चले गए, जिसने सागर पर पुल बनाया, वह रावण को मारने वाला कहा हैं? और भी बहुत-से युधिष्ठिर जैसे पृथ्वीपालक मृत्यु को प्राप्त हो गए। किंतु पृथ्वी किसी के साथ नहीं गई। किंतु मुझे विश्वास है कि मुञ्ज यह पृथ्वी आपके साथ जाएगी।

राजा उस अर्थ को जानकर बिस्तर से भूमि पर गिर पड़ा।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) ब्राह्मणं प्रेषयित्वा मुञ्ज: व्यचिन्तयत् यत् यदि राजलक्ष्मी भोजकुमारं गमिष्यति तदा अहं जीवन्नपि मृत:। पुनश्च तन्नोद्यमै: किं दुस्साध्यम्?

(ख) अङ्गरक्षक: वत्सराजम् उपेत्य प्राह यत् राजा मुञ्ज त्वामाकारयति।

(ग) यदा भोज: कुपित: अभवत् तदा वत्सराज: अवदत् यत् भोज! वयं राजादेशकारिण:।

(घ) महामायाभवनम् असाद्य भोजं प्रति वत्सराज: प्राह यत् कुमार! भृत्यानां दैवत! केनचिद् ज्योतिषशास्त्रविशारदेन ब्राह्मणेन तव राज्य प्राप्तौ। उदीरितायां राज्ञा भवद्वध: व्यादिष्ट:।

(ङ) भोज: पत्रे अलिखत् यत् मान्धाता अन्ये च महीपत: युगम् अलकृङ्कृत्य अस्मात् गतवन्त:। महोदधौ येन सतु: विरचित: स: दशान रावणस्यान्तक: श्रीराम: कुत्र अस्ति? युधिष्ठिरादय: राजान: अपि दिवंगता: परं कोऽपि समं वसुमतिं नीत्वा न गत:। परं में विश्वासोऽस्ति यत् राजा मुञ्ज त्वम् अवश्यं नीत्वा गमिष्यति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) ततो राजा मुञ्ज: ब्राह्मणं प्रेषयित्वा निशीशे शयनमासाद्य एकाकी सन् **व्यचिन्तयत्।**

(ख) हे वत्सराज! त्वया भोजो **भुवनेश्वरी** अरण्ये हन्तव्य: प्रथमयामे निशाया:।

(ग) किञ्चित्मन्त्रणां कृत्वा पुन: पण्डितं वत्सराज प्राह-विप्र **भोज कुमारमानय** इति।

(घ) ततो राजा च पुत्रवधं ज्ञात्वा तमाह—'वत्सराज, **खड्गप्रहार** समये **तेन** पुत्रेण **किमुक्तम्** इति।'

(ङ) मान्धाता च महीपति: **कृतयुगालङ्कार** भूतो गत:।

(च) सेतुर्येन **महोदधौ** विरचित: क्वासौ **दशास्यान्तक:**।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

धातु: तव्यत् प्रत्ययान्त: अनीयर् प्रत्ययान्त:

अधि + इअधितव्य: **अध्ययनीय:**

वन्द् वन्दितव्य: **वन्दनीय:**

क्री क्रेतव्य: क्रेयणीय:

चर **चरितव्य:** चरणीय:

चि चेतव्य **चयनीय:**

सृज् **सृजेतव्य:** सर्जनीय:

4. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य-रचना संस्कृत में कीजिए—

(क) वृक्षस्य = भोज: **वृक्षस्य** पत्रं नीत्वा पुटकं निर्मापयति।

(ख) प्रेषयित्वा = राज्ञा मुञ्जेन सेवकं **प्रेषयित्वा** वत्सराज: आहूत:।

(ग) अङ्गरक्षक: = भोजम् **अङ्गरक्षकः** वनात् आनयति।

(घ) तृणम् = भोज: एकं **तृणं** नीत्वा मुञ्जाय पत्रं लिखति।

(ङ) भार्या = राजा स्व **भार्याकरेण** दीपकं नयति।

5. निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों को शुद्ध कीजिए और लिखिए—

(क) राम: दण्डकारण्यम् अधिवसति।

(ख) मम गृहे शत पुस्तकानि सन्ति।

(ग) गणेशाय मोदकं रोचते।

(घ) हरि: कृष्णाय कुप्यति।

(ङ) वयं निर्धनेभ्य: धनं दास्याम:।

(च) वयं शिक्षकात् अपठाम।

6. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) पुरा सिन्धुल नाम्न: राजा बभूव।

(ख) मुञ्जेन विप्र: प्रेषित:।

(ग) चिन्तायां निमग्न: राजा शयित:।

(घ) भोजं नीत्वा स: महामाया भवनम् आगत:।

(ङ) राजा पत्रं पठति।

(च) इयं वसुधा त्वया सह यास्यति।

7. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

किञ्चितमन्त्रणाम् = **किञ्चित् + मन्त्रणाम्**

प्रेषयित्वा = **प्रेषय् + क्त्वा**

स्वभार्याकरेण = **स्वभार्या + करेण**

रक्तमारोप्य = **रक्तम् + आरोप्य**

8. निम्नलिखित को याद कीजिए—

उत्तर—(स्वयं कीजिए)।

पञ्चविंशतिः पाठः

विद्यार्थी-जीवनम्

हिंदी अनुवाद

विद्यार्थी-जीवनं ..... न कर्त्तव्यः।

अनुवाद—विद्यार्थी-जीवन मानवजीवन का स्वर्णकाल है। इसी काल में मानव-जीवन का निर्माण होता है क्योंकि इसी काल में ही छात्र जैसा चरित्र चुनता है उससे ही अपनी जीवनयात्रा का निर्वाह करता है। विद्याध्ययन विद्यार्थी-जीवन का पहला कर्त्तव्य है। विद्याध्ययन का समय तपस्या का समय ही है। इसलिए इस काल में सभी सुखों को छोड़कर अध्ययन ही छात्र का कर्त्तव्य होना चाहिए।

विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वे हमेशा गुरु के अनुशासन में रहें। गुरुओं की सेवा, सम्मान और आज्ञापालन उनका परम कर्त्तव्य होना चाहिए। गुरु के अनुशासन में रहकर उसकी आज्ञा से सभी कार्य नियम से करने चाहिए। समय का दुरुपयोग कभी नहीं करना चाहिए।

आत्मविकासः ..... प्राप्नोति।

अनुवाद—आत्मविकास विद्यार्थी के जीवन का मुख्य उद्देश्य है। इसलिए वे हमेशा आत्मविकास के लिए कोशिश में लगे रहने वाले हों। विद्यार्थियों के कर्त्तव्य के विषय में किसी कवि ने कहा है—

कौए के समान इच्छा, बगुले के समान ध्यान, कुत्ते के समान नींद, कम खाने वाला और घर का त्याग करने वाला, ऐसे ही पाँच लक्षण विद्यार्थी के हैं।

विद्यार्थी हमेशा कौए के समान इच्छा करे। जैसे बगुला ध्यान में स्थिर रहता है वैसे ही छात्र भी विद्याध्ययन में स्थिर हो। जैसे कुत्ता कम ही सोता है वैसे ही छात्र भी कम सोए। अधिक भोजन करने से आलस्य होता है, इसलिए विद्यार्थी को कम ही खाना चाहिए। ब्रह्मचर्य का पालन तो उनके लिए सबसे श्रेष्ठ है। इस प्रकार अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए विद्यार्थी परम उन्नति को प्राप्त करता है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) मानवजीवनस्य स्वर्णकालं विद्यार्थी-जीवनम् अस्ति।

(ख) सर्वाणि सुखानि विहाय अध्ययनमेव छात्रस्य कर्त्तव्यं भवेत्।

(ग) विद्यार्थी-जीवनस्य मुख्यम् उद्देश्यम् आत्मविवस: अस्ति।

(घ) काकवत् चेष्टा, बकोध्यानं, श्वाननिद्रा अल्पाहारी गृहत्यागी च एतानि पञ्च लक्षणानि सन्ति।

(ङ) स्वकर्त्तव्यं पालयन् विद्यार्थी परमोन्नतिं प्राप्नोति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) विद्यार्थी-जीवनं मानवजीवनस्य **स्वर्णकालम्** अस्ति।

(ख) **विद्याध्ययनं** विद्यार्थी जीवनस्य प्रथमं कर्त्तव्यम् अस्ति।

(ग) आत्मविकास: विद्यार्थिन: मुख्यं **उद्देश्यम्** अस्ति।

(घ) विद्यार्थी सदैव **काकवत्** चेष्टां कुर्यात्।

(ङ) **अधिकाहारेण** आलस्यं भवति।

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) प्रथमम् = **अन्तिमम्** — नृप: वस्त्राणि दानाम अन्तिमं भिक्षुकमपि आह्वयति।

(ख) अल्पम् = **अधिकम्** — विद्यार्थिना: अधिकं भोजनं न कर्त्तव्यम्।

(ग) सदुपयोग: = **दुरुपयोग:** — केनापि जनेन समयस्य दुरुपयोग: न करणीय:।

(घ) मुख्यम् = **गौणम्** — विद्यार्थिन: जीवने अन्यं सुखं गौणं स्यात्।

(ङ) सुखानि = **दु:खानि** — दु:खानि विनाशयितुं आत्मोन्नति: परमावश्यका अस्ति।

4. निम्नलिखित शब्दों में वाक्य प्रयोग कीजिए—

(क) आलस्यम् = अधिकाहारेण **आलस्यं** भवति।

(ख) जीवनस्य = आत्मविन्यास: **जीवनस्य** मुख्य: उद्देश्य: स्यात्।

(ग) सदुपयोग: = अस्माभि: सर्वदा समयस्य **सदुपयोग:** करणीय:।

(घ) निर्माणम् = विद्यार्थी-जीवने एव सम्यग् जीवन **निर्माणम्** भानितुमर्हति।

(ङ) सदैव = विद्यार्थिन: **सदैव** गुरूणाम् आज्ञा पालनी या।

5. निम्नलिखित अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए—

विद्यार्थी ..... प्राप्नोति।

अनुवाद—विद्यार्थी हमेशा कौए के समान इच्छा करे। जैसे बगुला ध्यान में स्थिर रहता है वैसे ही छात्र भी विद्याध्ययन में स्थिर हो। जैसे कुत्ता कम ही सोता है वैसे ही छात्र भी कम सोए। अधिक भोजन करने से आलस्य होता है, इसलिए विद्यार्थी को कम ही खाना चाहिए। ब्रह्मचर्य का पालन तो उनके लिए सबसे श्रेष्ठ है। इस प्रकार अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए विद्यार्थी परम उन्नति को प्राप्त करता है।

6. निम्नलिखित शब्दों को बहुवचन में बदलिए—

एकवचन		**बहुवचन**
विकासाय	=	**विकासेभ्य:**
जीवनस्य	=	**जीवनानाम्**
गुरुणा	=	**गुरुभि:**
सुखम्	=	**सुखानि**
काले	=	**कालेषु**
विद्यार्थी	=	**विद्यार्थिन:**

षड्विंशतिः पाठः

परिशिष्टः

(विद्यार्थी स्वयं करें।)